Anweshan

In Quest of Dimension

January, 2026
Volume 7, Issue 1

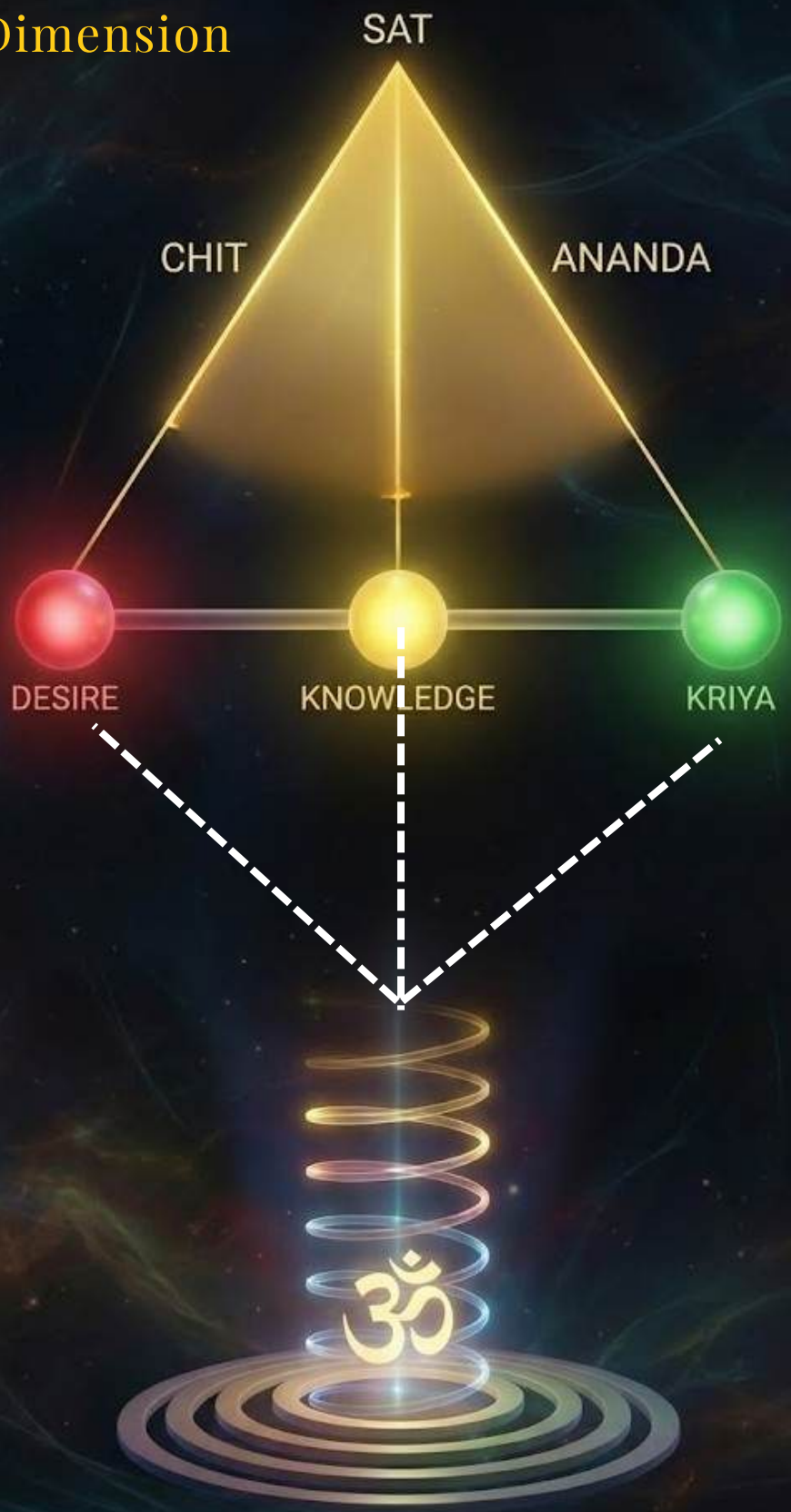

RAJ YOGA KRIYA YOGA MISSION

Service to Atman is Service to Param Atman

स उ प्राणस्य प्राणः

ANWESHAN

MOUTHPIECE OF RYKYM

Digital Edition Release Date: 4th January 2026

Volume – 7: Issue - 1

PUBLISHER:

RAJ YOGA KRIYA YOGA MISSION
Aparna Apartment (Ground Floor)
156, B.G.G. Sarani, P.O. – Bhadrakali
P.S. – Uttarpara, Hooghly – 712232, WB

Copyright © RAJ YOGA KRIYA YOGA MISSION

Website: **www.rykym.org**

সংঘ মাতা - SANGH MATA:

শ্রীমতী সুজাতা রায় (Srimati Sujata Ray)

সম্পাদক মণ্ডলী - EDITORIAL TEAM:

পাপিয়া চ্যাটার্জী (Papia Chatterjee)
সাকেত শ্রীবাস্তব (Saket Shrivastava)
সুদীপ চক্রবর্তী (Sudeep Chakravarty)

গ্রাফিক্স ডিজাইন এবং আর্ট ওয়ার্ক – GRAPHICS DESIGN AND ARTWORK:

দীপাঞ্জন দে (Dipanjan Dey)
সুজয় বিশ্বাস (Sujay Biswas)

অন্বেষণ

ষোড়শ ডিজিটাল সংখ্যা

রাজযোগ - ক্রিয়াযোগ মিশন - এর মুখপত্র

ওঁ পূর্ণমদঃ পূর্ণমিদং পূর্ণাৎ পূর্ণমুদচ্যতে।
পূর্ণস্য পূর্ণমাদায় পূর্ণমেবাবশিষ্যতে।

ধ্যানমূলং গুরোরমুর্তি
পূজামূলং গুরুর পদং
মন্ত্রমূলং গুরোরব্যকং
মোক্ষমূলংগুরোরকৃপা

ওঁ
অখণ্ডমণ্ডলাকারং ব্যাপ্তং যেন চরাচরম্ ।
তত্পদং দর্শিতং যেন তস্মৈ শ্রীগুরবে নমঃ ।।

ওঁ শান্তিঃ শান্তিঃ শান্তিঃ।।

স উ প্রাণস্য প্রাণঃ
রাজযোগ ক্রিয়াযোগ মিশন

Guru Paduka Stotram Shlok 1

अनंतसंसार-समुद्रतार-
नौकायिताभ्यां गुरुभक्तिदाभ्याम् ।
वैराग्यसाम्राज्यद-पूजनाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 1 ॥

Nālīkanīkāśa-padāhṛtābhyāṁ
Nānā-vimohādi-nivārikābhyām ।
Namaj-janābhīṣṭa-tati-pradābhyāṁ
Namo namaḥ Śrī-Guru-pādukābhyām ॥

“I bow again and again to the holy sandals of my Guru. They serve as the boat to cross the endless ocean of worldly existence (Samsara). They bestow devotion toward the Guru, and their worship grants the supreme empire of Renunciation (Vairagya).”

TABLE OF CONTENTS

Editorial 04

(in English, Bangla and Hindi)

Guru-Shishya Katha 08

by Gurudev Dr. Sudhin Ray

(in English, Bangla and Hindi)

Articles in English

Gurudev & a Few Words 18

The Grace Disguised as Anger 24

Blessings in the Hills : The Day Babaji Made His Presence Known 28

Asatoma Sadgamaya Shloka and Kriya Yoga : A Journey from Illusion to Truth 35

Why Discipline Matters in Kriya Yoga 39

My Journey with Kriya Yoga: Bridging Body, Mind, and Spirit 42

Articles in Bangla (বাংলা)

ওঁ গুরু 45

গুরুদেব কে যেমন দেখেছি 46

শূন্য থেকে ...অনন্তের পথে 52

ভালোবাসার সন্ধানে 62

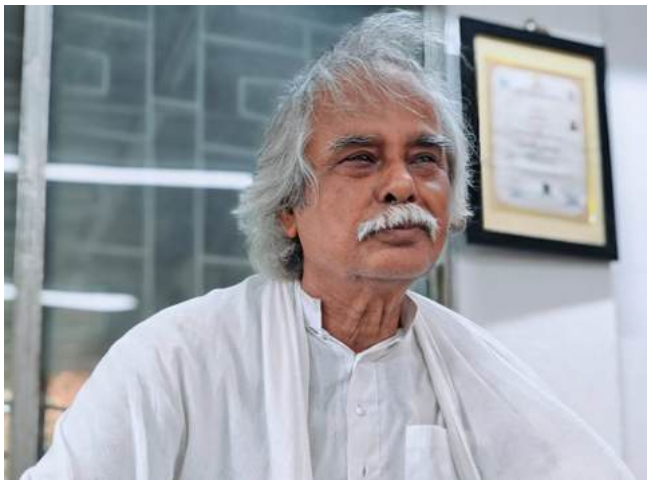

Events @ RYKYM

Guru Poornima Celebration 15

Unveiling the Maheshwari Prasad Dubey Granthagar 16

Birthday Celebration of Gurudev 17

Kriya Diksha 21

Durga Puja Celebration 44

*প্রকাশিত লেখার বক্তব্য লেখকের নিজস্ব এবং এর কোনোওরূপ দায়িত্ব মিশন কর্তৃপক্ষের নয়।

*प्रकाशित आलेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखक के निजी हैं, तथा राज योग क्रिया योग मिशन उनके लेख के लिए किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है

*Views, thoughts, and opinions expressed in the articles belong solely to the author, and not necessarily to the Raj Yoga Kriya Yoga Mission.

Editorial

Every Kriyavan should ask themselves this question: "Why did I take Kriya initiation from Gurudev?"

Most of us surely come to Kriya after reading a few books, seeing videos on social media, or receiving references from fellow Kriyavans. But why Kriya? Why not anything else? On the other hand, many people arrive at Kriya only after spending a significant amount of time on other spiritual paths.

We can categorize these seekers into three distinct groups:

1. **The "Young" Seekers:** These are not necessarily young in age but are new to the spiritual quest. Driven by a sudden sprout of spiritual curiosity, they are mainly impressed or influenced by the supernatural abilities that Kriya can bestow. This allure attracts them to the path.
2. **The Dissatisfied Wanderers:** These are people who are dissatisfied after trying too many things. They have visited numerous gurus and siddhas but remain unsatisfied, eventually coming to Kriya. However, they may wander away from Kriya to yet another path in the future.
3. **The Genuine Inquirers:** These are the seekers who truly want to find answers about the Self. They ask: If God exists, where is He? If He is omnipresent, can I see Him? If He dwells within me, can I experience Him?

However, falling into the third category does not automatically mean one is an evolved seeker. Their understanding is often based on a logical approach. Both the Bhakta (devotee) and the Gyani (intellectual seeker) fall into this category.

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

Kriya is the sublimation of all paths. Many Western sadhakas struggle to accept the Bhakti aspect of Kriya, preferring to stay with the technical practice and logic like a Gyani. Yet, in the end, the seeker will understand that all Gyanis eventually become Bhaktas, as there is no final leap without surrender and devotion.

It reminds us of the words of Swami Vivekananda: "You may think, seeing me, that I am a Gyani, but at my very core, I am a Bhakta."

Om Tat Sat

সম্পাদকীয়

প্রতিটি ক্রিয়াবানকে নিজের কাছে এই প্রশ্নটি করা উচিত: "কেন আমি গুরুদেবের কাছ থেকে ক্রিয়া দীক্ষা নিয়েছিলাম?"

আমাদের বেশিরভাগই নিশ্চয়ই কিছু বই পড়ে, সোশ্যাল মিডিয়ায় ভিডিও দেখে বা সহ-ক্রিয়াবানদের কথা শুনে ক্রিয়ায় এসেছি। কিন্তু কেন এই ক্রিয়া? অন্য কিছু নয় কেন? অন্যদিকে, অনেকে আছেন যারা অন্যান্য আধ্যাত্মিক পথে অনেকটা সময় ব্যয় করার পরেই ক্রিয়ায় এসেছেন।

আমরা এই সাধকদের তিনটি ভাগে ভাগ করতে পারি:

1. **'নবীন' সাধক:** এরা বয়সে নবীন নয়, বরং আধ্যাত্মিক অন্বেষণে নতুন। জীবনে হঠাৎ জেগে ওঠা আধ্যাত্মিক কৌতূহলের কারণে, এরা মূলত সেইসব অলৌকিক ক্ষমতা বা সিদ্ধি দ্বারা প্রভাবিত হয় যা ক্রিয়া প্রদান করতে পারে। এই আকর্ষণই তাদের এই পথের দিকে টেনে আনে।
2. **অসন্তুষ্ট পরিব্রাজক:** এরা হলেন সেই সব মানুষ যারা অনেক কিছু চেষ্টা করেও অসন্তুষ্ট। তারা অনেক গুরু ও সিদ্ধদের দ্বারে ঘুরেও তৃপ্ত হননি এবং অবশেষে ক্রিয়ায় এসেছেন। হতে পারে ভবিষ্যতে তারা ক্রিয়া ছেড়ে অন্য কোনো পথে পা বাড়াবেন।
3. **প্রকৃত সত্য অনুসন্ধানকারী:** এরা সেই সাধক যারা সত্যিই 'আত্ম' সম্পর্কে উত্তর খুঁজছেন। তারা প্রশ্ন করেন: ঈশ্বর যদি থাকেন, তবে তিনি কোথায়? তিনি যদি সর্বব্যাপী হন, তবে আমি কি তাকে দেখতে পারি? যদি তিনি আমার মধ্যেই বাস করেন, তবে আমি কি তাকে অনুভব করতে পারি?

যাইহোক, তৃতীয় বিভাগে থাকার অর্থ এই নয় যে তিনি একজন উন্নত স্তরের সাধক। তাদের বোঝাপড়া প্রায়শই যুক্তির ওপর ভিত্তি করে হয়। 'ভক্ত' এবং 'জ্ঞানী' উভয়ই এই বিভাগের অন্তর্ভুক্ত।

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

ক্রিয়া হলো সমস্ত পথের সারমর্ম। অনেক পাশ্চাত্য সাধক ক্রিয়ার 'ভক্তি' দিকটি মেনে নিতে চান না এবং জ্ঞানীর মতো কেবল অভ্যাস এবং যুক্তির সাথে থাকতে পছন্দ করেন। কিন্তু শেষ পর্যন্ত, সাধক বুঝতে পারবেন যে সমস্ত জ্ঞানীই শেষ পর্যন্ত ভক্তে পরিণত হন, কারণ সমর্পণ এবং ভক্তি ছাড়া সেই শেষ লাফ দেওয়া সম্ভব নয়।

এটি আমাদের স্বামী বিবেকানন্দের সেই কথাটি মনে করিয়ে দেয়: "আমাকে দেখে তোমরা মনে করতে পারো যে আমি একজন জ্ঞানী, কিন্তু আমার অন্তরের অন্তস্থলে আমি একজন ভক্ত।"

হরি ওঁ তৎ সৎ॥

संपादकीय

हर क्रियावान को स्वयं से यह प्रश्न पूछना चाहिए: "मैंने गुरुदेव से क्रिया दीक्षा क्यों लिया है ?"

हममें से अधिकांश लोग निश्चित रूप से कुछ किताबें पढ़कर, सोशल मीडिया पर वीडियो देखकर या साथी क्रियावानों से प्रभावित होकर क्रिया योग के प्रति आकृष्ट होते हैं। लेकिन क्रिया ही क्यों? कुछ और क्यों नहीं? दूसरी ओर, बहुत से लोग अन्य आध्यात्मिक मार्गों पर अच्छा-खासा समय बिताने के बाद क्रिया की तरफ मुड़ते हैं।

हम इन साधकों को तीन श्रेणियों में रख सकते है:

1. 'युवा' साधक: ये उम्र से युवा नहीं, बल्कि आध्यात्मिक खोज में नए हैं। जीवन में अचानक जगी आध्यात्मिक प्यास के कारण, ये मुख्य रूप से उन अलौकिक क्षमताओं (सिद्धियों) से प्रभावित होते हैं जो क्रिया प्रदान कर सकती है। यही आकर्षण उन्हें इस मार्ग की ओर खींचता है।
2. असंतुष्ट भटकने वाले: ये वे लोग हैं जो बहुत सी चीजें आजमाने के बाद भी असंतुष्ट हैं। वे कई गुरुओं और सिद्धों के पास गए लेकिन तृप्ति नहीं मिली, और अंततः क्रिया योग के प्रति आकृष्ट हुए। हो सकता है कि वे भविष्य में क्रिया छोड़कर किसी नए रास्ते की तलाश में लग जाये।
3. सच्चे जिज्ञासु: ये वे साधक हैं जो वास्तव में 'स्वयं' के बारे में उत्तर खोजना चाहते हैं। वे पूछते हैं: यदि ईश्वर है, तो वह कहाँ है? यदि वह सर्वव्यापी है, तो क्या मैं उसे देख सकता हूँ? यदि वह मेरे भीतर निवास करता है, तो क्या मैं उसका अनुभव कर सकता हूँ?

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

हालाँकि, तीसरी श्रेणी में होने का मतलब यह नहीं है कि वह एक विकसित साधक है। उनकी समझ अक्सर तर्क पर आधारित होती है। 'भक्त' और 'ज्ञानी' दोनों इस श्रेणी में आते हैं।

क्रिया सभी मार्गों का सार है। कई पश्चिमी साधक क्रिया के 'भक्ति' पक्ष को स्वीकार नहीं करते और एक ज्ञानी की तरह केवल अभ्यास और तर्क के साथ रहना चाहते हैं। लेकिन अंत में, साधक यह समझ जाएगा कि सभी ज्ञानी अंततः भक्त बन जाते हैं, क्योंकि समर्पण और भक्ति के बिना अंतिम छलांग संभव नहीं है।

यह हमें स्वामी विवेकानंद के शब्दों की याद दिलाता है: "मुझे देखकर तुम्हें लग सकता है कि मैं एक ज्ञानी हूँ, लेकिन अपने भीतर की गहराइयों में, मैं एक भक्त हूँ।"

हरि ॐ तत् सत्॥

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

Guru sishya katha

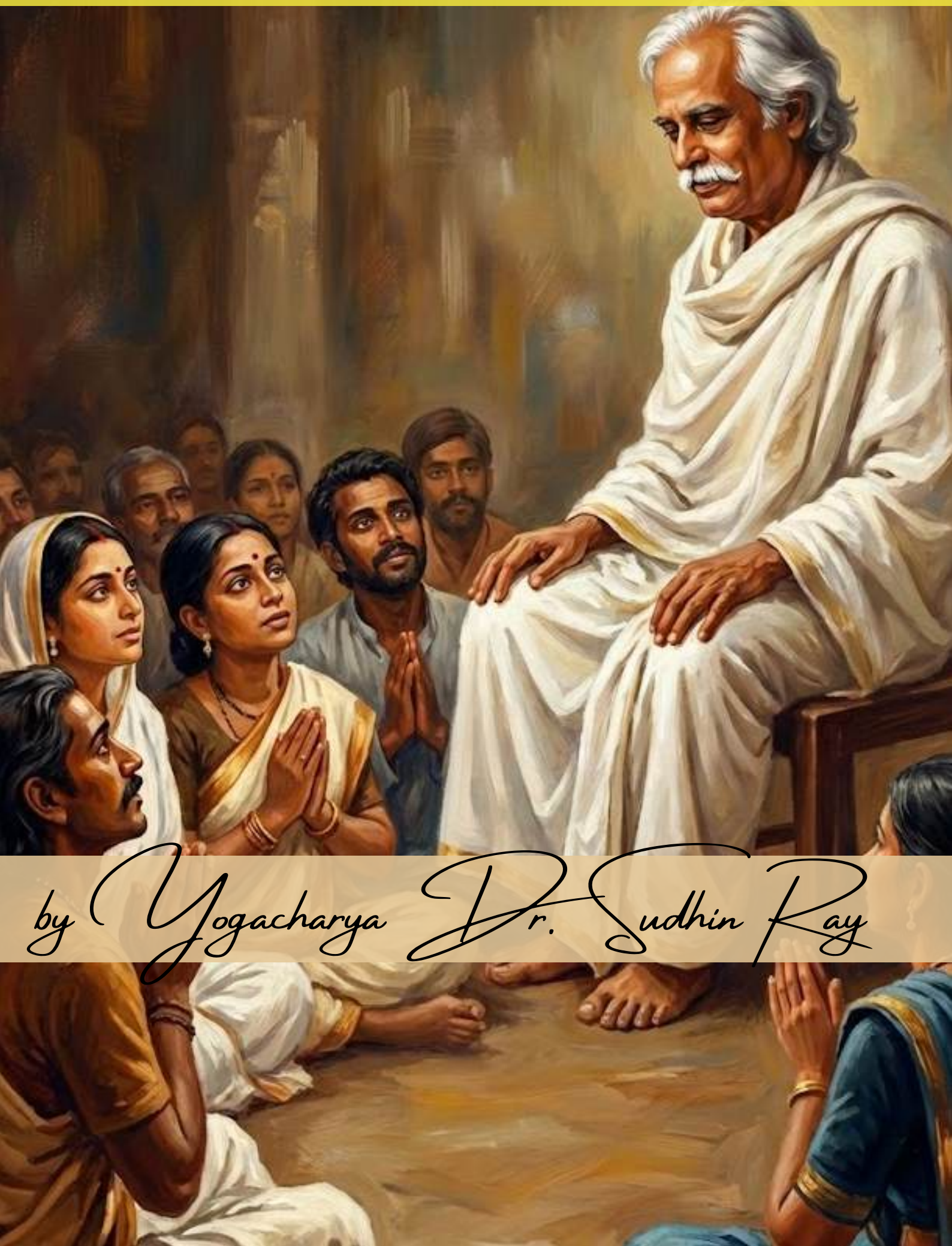

by Yogacharya Dr. Sudhin Ray

A deeper contemplation reveals the true nature of Prakriti (Nature) or the 'Mother.' Our Cosmic Mother provides everything for us unconditionally, without any discrimination. However, we often utilize these resources with selfishness, using our will and power to inflict pain upon others, ignoring the benevolence of the Source.

To understand creation, we must view it through a different lens:
Worldly creation is formed by the union of 49 atoms (vibrations or Matrikas). If we treat this collective of 49 as a single unit and add 1 (the Self/Witness), we arrive at the 2nd state, totaling the number 50.

Through the practice of Pranayama—specifically Anulom (inhalation) and Vilom (exhalation)—this 50 is doubled. The internal and external currents combine to form the number 100. This "one hundred percent" represents the complete cause and substance of all creation. Beyond the state of completeness (100) lies the Kutastha (the spiritual eye or immutable center). It is a barrier that no one but a true Yogi can easily transcend. The states of consciousness beyond this point are mapped as follows:

- 101 to 104 (Vruhat Kutastha): Upon crossing the barrier, one enters a void state of realization known as the Vruhat Kutastha (The Vast Spiritual Eye).
- 105 to 106 (Mahashunya): From the Vast Kutastha, the journey continues into the Mahashunya (The Great Void).
- 107 (Parama Prakriti): This is the realization of Supreme Nature, the Divine Mother.
- 108 (Paramapurusha): This is the realization of the Supreme Soul, the Divine Father.
- 109 (Purna Avastha): This is the Complete State, where the Soul is fully illuminated.

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

Can these high states be understood through spiritual practice (Kriya Sadhana)? Yes, through two distinct streams that both lead to Prajna (Divine Wisdom):

- The Path of Yoga: This follows the current of evolution.
- The Path of Renunciation: This invokes Vivek Jyoti (The Light of Conscience and Discrimination).

Spiritual progression moves through two types of motion:

- Circular Motion: The cycle of Karma and rebirth.
- Linear Motion: When the circular motion ends, the straight path opens up, and God (Ultimate Reality) appears directly in front.

At this stage, self-effort ceases. The Yogi no longer "practices" Kriya; rather, Kriya happens automatically without the effort of the Sadhak (practitioner).A state of Duality begins. The Yogi perceives the Self ("I") and the Supreme (Ishta) as distinct, where the "I" merely witnesses the Supreme.

Gradually, the distance between Duality and Non-Duality diminishes. The Devotee and God merge; the Ishta (Chosen Deity) enters the devotee. This results in a strange and profound state of equilibrium where the "I" no longer exists. This is the Advaita (Non-dual) state.

Behind the Unmanifest (Avyakta) lies Sat (Pure Existence). In the Unmanifest state, existence resides as Chit-Shakti (Consciousness-Force).When Chit-Shakti expresses itself, Ananda (Bliss) is attained.

When this Infinite Bliss contracts or becomes limited, Iccha (Desire) arises.From Desire comes Jnana (Knowledge).Through Kriya practice, the Yogi gains Darshana (Yogic Vision) and retraces this path.

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

During Kriya, the specific vibration of Knowledge (Jnana Kala) enters. From the vibration of Knowledge comes the specific vibration of Bliss (Ananda Kala). From the vibration of Bliss, one reaches the Unmanifest (Avyakta) state.

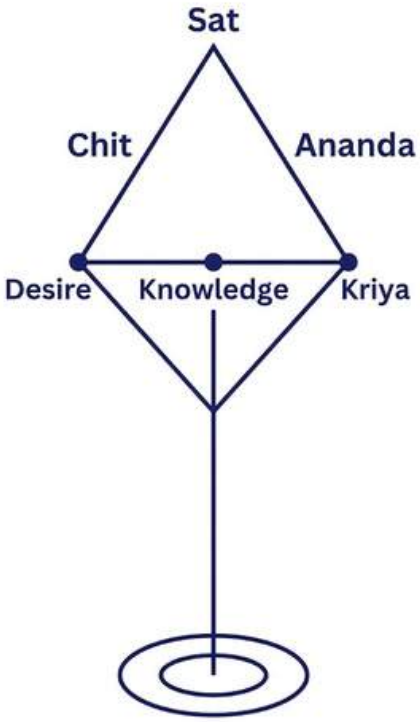

Here, Om (ॐ) manifests. From the aggregate of these specific vibrations (the 16 aspects) of Om, the Tattvas (Principles/Elements) are generated. Finally, from the Tattvas, the Samsara (The World/Creation) comes into being.

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

“গুরু-শিষ্য কথা”

- আচার্য্য শ্রী ডঃ সুধীন রায়

প্রকৃতি বা 'মা' কেমন একটু ভাবলেই বুঝতে পারবে। আমাদের প্রকৃতি বা মা কোনরকম ভেদ ভাব না রেখে সবকিছু আমাদের জন্য দিয়ে রেখেছেন, আমরা নানাভাবে সেই সব ব্যবহার করি আর স্বার্থপরও হই। নিজেদের ইচ্ছামত ক্ষমতা ব্যবহার করে অন্যকে কষ্ট দিই।

এবার একটু অন্যভাবে ভাবো, আমরা জানি জাগতিক সৃষ্টি ৪৯ টি অনুর মিলনে তৈরী, তাকে একক ধরলে (অর্থাৎ) ও ১ কে যুক্ত করলে ২য় ভাব।

এই পঞ্চাশকে অনুলোম আর বিলোমের সাহায্যে প্রাণায়াম হয় ১০০ সংখ্যা। এই এক শতাংশ হচ্ছে সমস্ত সৃষ্টির কারণ।

এর উপরে ধরা হয় কূটস্থ। যোগী ভিন্ন আর কেউ কূটস্থ অতিক্রম করতে সহজে পারেনা। তখন যে মহাশূন্যের স্থান আসে সেই স্থান হচ্ছে ১০৫ - ১০৬, ১০৭ হচ্ছে পরমা প্রকৃতি অর্থাৎ মা। আর ১০৮ হচ্ছে পরমপুরুষ, ১০৯ হচ্ছে পূর্ণ অবস্থা, এখানে আত্মার পূর্ণ স্ফুরণ হয়। ১০১ থেকে ১০৪, যে শূন্য অবস্থা তাতে বৃহৎ কূটস্থের উপলব্ধি হয়, সেই অবস্থা থেকে মহা শূন্যের দিকে এগিয়ে যাওয়া যায়।

সাধনার সাহায্যে এ সব বোঝা যায় কি না? উত্তরে বলা হলো দুটো রকম প্রবাহ আছে এক হচ্ছে যোগ নির্ভর পথ, আর এক হচ্ছে ত্যাগের পথ (ভক্তির পথ)। যোগের পথে বিবর্তন আসে আর ত্যাগের পথে আসে বিবেক জ্যোতি।

যে কোন ধারাতেই প্রজ্ঞা লাভ হয়। অর্থাৎ আবর্ত গতি আর সরল গতি হয়। আবর্ত শেষ হলেই সরল রেখার পথ খুলে যায়। তখন ভগবান সামনেই উপস্থিত হয়। তখন আত্ম কর্ম থাকে না ও আরম্ভ হয় দ্বৈত ভাব যা শুধু চেয়ে দেখার অবস্থা হয় আস্তে আস্তে অদ্বৈত দ্বৈত্যের দূরত্ব কমে যায় তখন ভক্ত ও ভগবানের মিলন হয় তখন ইস্ট ভক্তের মধ্যে প্রবেশ করেন এ এক অদ্ভুত সাম্য অবস্থা তখন আর আমি নেই এটাই অদ্বৈত অবস্থা।

অব্যক্তের পেছনে থাকে সৎ অর্থাৎ সত্তা অব্যক্ত অবস্থায় হচ্ছে চিৎশক্তি, চিৎশক্তির প্রকাশ যখন হয় তখন আনন্দ লাভ হয়। আনন্দ যখন ক্ষুদ্র হয় তখন ওই ইচ্ছার উদয় হয়, ইচ্ছা থেকেই আসে জ্ঞান। এরপরে ক্রিয়ার সাহায্যে দর্শনের কারণ হয় এবং ক্রিয়া কালীন জ্ঞান কলাই প্রবেশ করে এইভাবে জ্ঞান কলা থেকে আনন্দ কলা এবং অব্যক্ত হয় এবং ওঁ এর সৃষ্টি হয়, কলা সমষ্টি ওঁ থেকে তত্ত্ব ও থেকে সংসার বা সৃষ্টি তৈরি হয়।

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

“गुरु-शिष्य कथा”

- आचार्य श्री डॉ. सुधीन राय

गहरे चिंतन से प्रकृति या 'माँ' का सच्चा स्वरूप प्रकट होता है। हमारी ब्रह्मांडीय माँ हमें बिना किसी भेदभाव के सब कुछ निस्वार्थ भाव से प्रदान करती हैं। हालाँकि, हम अक्सर इन संसाधनों का उपयोग स्वार्थ के साथ करते हैं, अपनी इच्छा और शक्ति का प्रयोग दूसरों को दुःख देने के लिए करते हैं, और स्रोत (परमात्मा) की दयालुता की अनदेखी करते हैं।

सृष्टि को समझने के लिए, हमें इसे एक अलग दृष्टिकोण से देखना होगा: सांसारिक सृष्टि ४९ परमाणुओं (कंपन या मातृकाओं) के मिलन से बनी है। यदि हम ४९ के इस समूह को एक इकाई मानें और उसमें १ (स्वयं/साक्षी) जोड़ दें, तो हम दूसरी अवस्था पर पहुँचते हैं, जो कुल मिलाकर ५० होती है।

प्राणायाम के अभ्यास के माध्यम से—विशेष रूप से अनुलोम (श्वास लेना) और विलोम (श्वास छोड़ना)—यह ५० दोगुना हो जाता है। आंतरिक और बाहरी धाराएँ मिलकर १०० की संख्या बनाती हैं। यह 'सौ प्रतिशत' समस्त सृष्टि का पूर्ण कारण और सार है।

पूर्णता की इस स्थिति (१००) के परे कूटस्थ (आध्यात्मिक नेत्र या अचल केंद्र) स्थित है। यह एक ऐसी बाधा है जिसे सच्चे योगी के अलावा कोई भी आसानी से पार नहीं कर सकता। इस बिंदु से आगे चेतना की अवस्थाओं का मानचित्रण इस प्रकार है:

- १०१ से १०४ (वृहत कूटस्थ): बाधा को पार करने पर, व्यक्ति अनुभूति की एक शून्य अवस्था में प्रवेश करता है जिसे 'वृहत कूटस्थ' (विशाल आध्यात्मिक नेत्र) कहा जाता है।
- १०५ से १०६ (महाशून्य): वृहत कूटस्थ से, यात्रा 'महाशून्य' (Great Void) की ओर जारी रहती है।
- १०७ (परमा प्रकृति): यह सर्वोच्च प्रकृति, यानी दिव्य माँ का साक्षात्कार है।
- १०८ (परमपुरुष): यह सर्वोच्च आत्मा, यानी दिव्य पिता का साक्षात्कार है।
- १०९ (पूर्ण अवस्था): यह पूर्ण अवस्था है, जहाँ आत्मा पूर्ण रूप से प्रकाशित होती है।

क्या इन उच्च अवस्थाओं को आध्यात्मिक अभ्यास (क्रिया साधना) के माध्यम से समझा जा सकता है? हाँ, दो अलग-अलग धाराओं के माध्यम से जो दोनों ही प्रज्ञा (दिव्य ज्ञान) की ओर ले जाती हैं:

- योग का मार्ग: यह विवर्तन के प्रवाह का अनुसरण करता है।
- त्याग का मार्ग: यह विवेक ज्योति को जागृत करता है।

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

आध्यात्मिक प्रगति दो प्रकार की गति के माध्यम से होती है:

- आवर्त गति: कर्म और पुनर्जन्म का चक्र।
- सरल गति: जब आवर्त गति समाप्त हो जाती है, तो सीधा रास्ता खुल जाता है, और ईश्वर (परम सत्य) सीधे सामने प्रकट होते हैं।

इस चरण में, आत्म-प्रयास समाप्त हो जाता है। योगी अब क्रिया का 'अभ्यास' नहीं करता; बल्कि, साधक के प्रयास के बिना क्रिया स्वतः होने लगती है। द्वैत की एक अवस्था शुरू होती है। योगी स्वयं ('मैं') और सर्वोच्च ('इष्ट') को अलग-अलग मानता है, जहाँ 'मैं' केवल सर्वोच्च का साक्षी होता है।

धीरे-धीरे, द्वैत और अद्वैत के बीच की दूरी कम हो जाती है। भक्त और भगवान एक हो जाते हैं; इष्ट (आराध्य देव) भक्त के भीतर प्रवेश करते हैं। इसका परिणाम संतुलन की एक अद्भुत और गहरी स्थिति होती है जहाँ 'मैं' का अस्तित्व नहीं रहता। यही अद्वैत अवस्था है।

अव्यक्त के पीछे सत् (शुद्ध अस्तित्व) निहित है। अव्यक्त अवस्था में, अस्तित्व चित्-शक्ति (चेतना-शक्ति) के रूप में रहता है। जब चित्-शक्ति स्वयं को व्यक्त करती है, तो आनंद प्राप्त होता है।
जब यह अनंत आनंद संकुचित या सीमित हो जाता है, तो इच्छा उत्पन्न होती है। इच्छा से ज्ञान आता है। क्रिया अभ्यास के माध्यम से, योगी दर्शन (योगिक दृष्टि) प्राप्त करता है और इस पथ पर वापस चलता है:

- क्रिया के दौरान, ज्ञान का विशिष्ट कंपन (ज्ञान कला) प्रवेश करता है।
- ज्ञान के कंपन से आनंद का विशिष्ट कंपन (आनंद कला) आता है।
- आनंद के कंपन से, व्यक्ति अव्यक्त अवस्था तक पहुँचता है।

यहाँ, ॐ प्रकट होता है। ॐ के इन विशिष्ट कंपनों (१६ कलाओं) के समूह से, तत्व उत्पन्न होते हैं। अंत में, तत्वों से संसार (विश्व/सृष्टि) अस्तित्व में आता है...

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

Guru Poornima Celebration @RYKYM 5th July, 2025

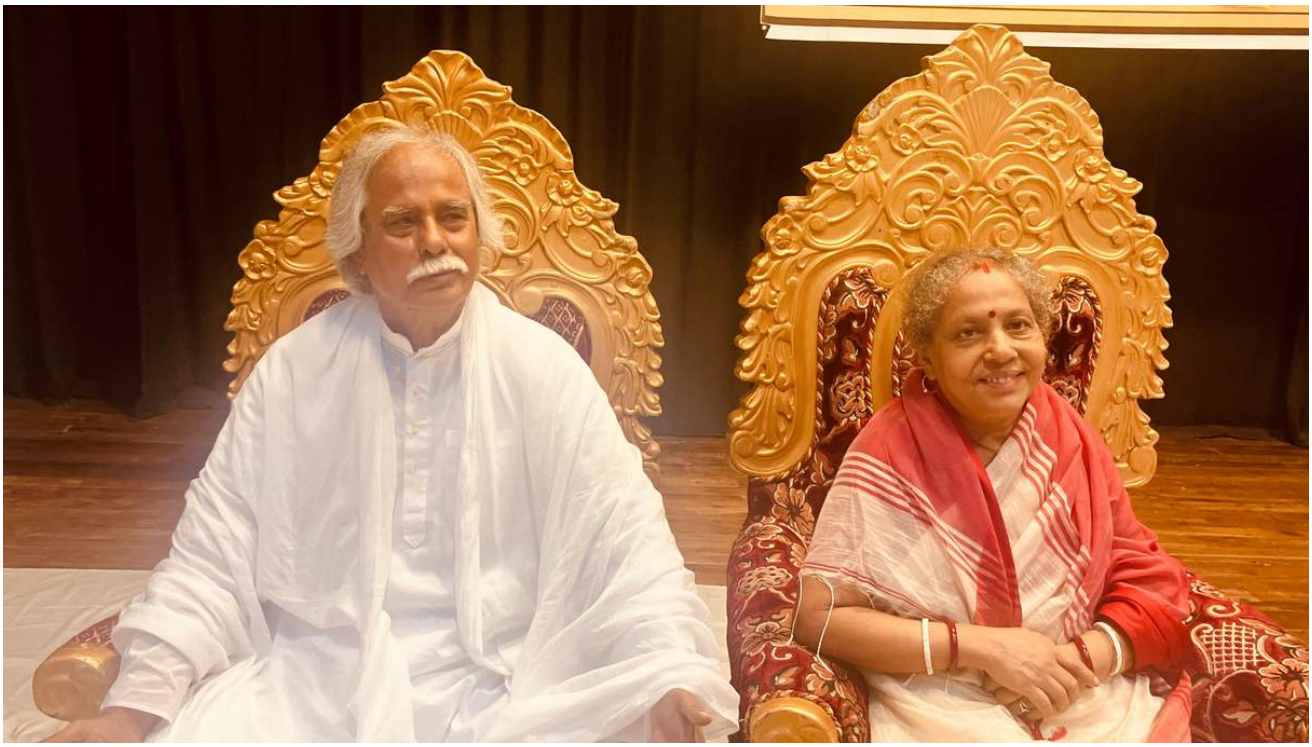

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

Unveiling the Maheshwari Prasad Dubey Granthagar, RYKYM @2025

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

Birthday Celebration of Gurudev, @RYKYM 2025

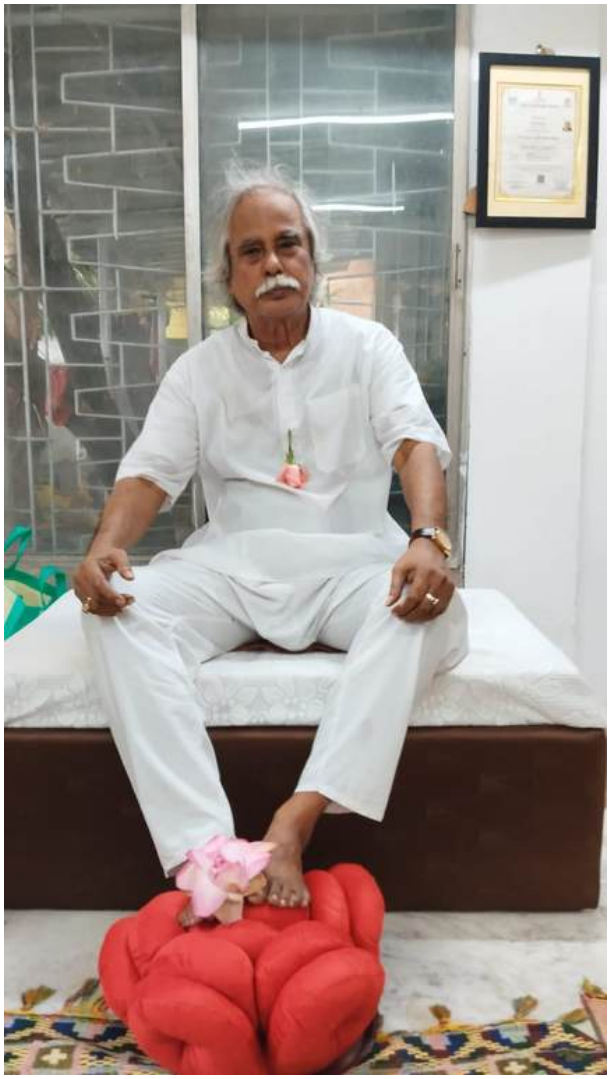

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

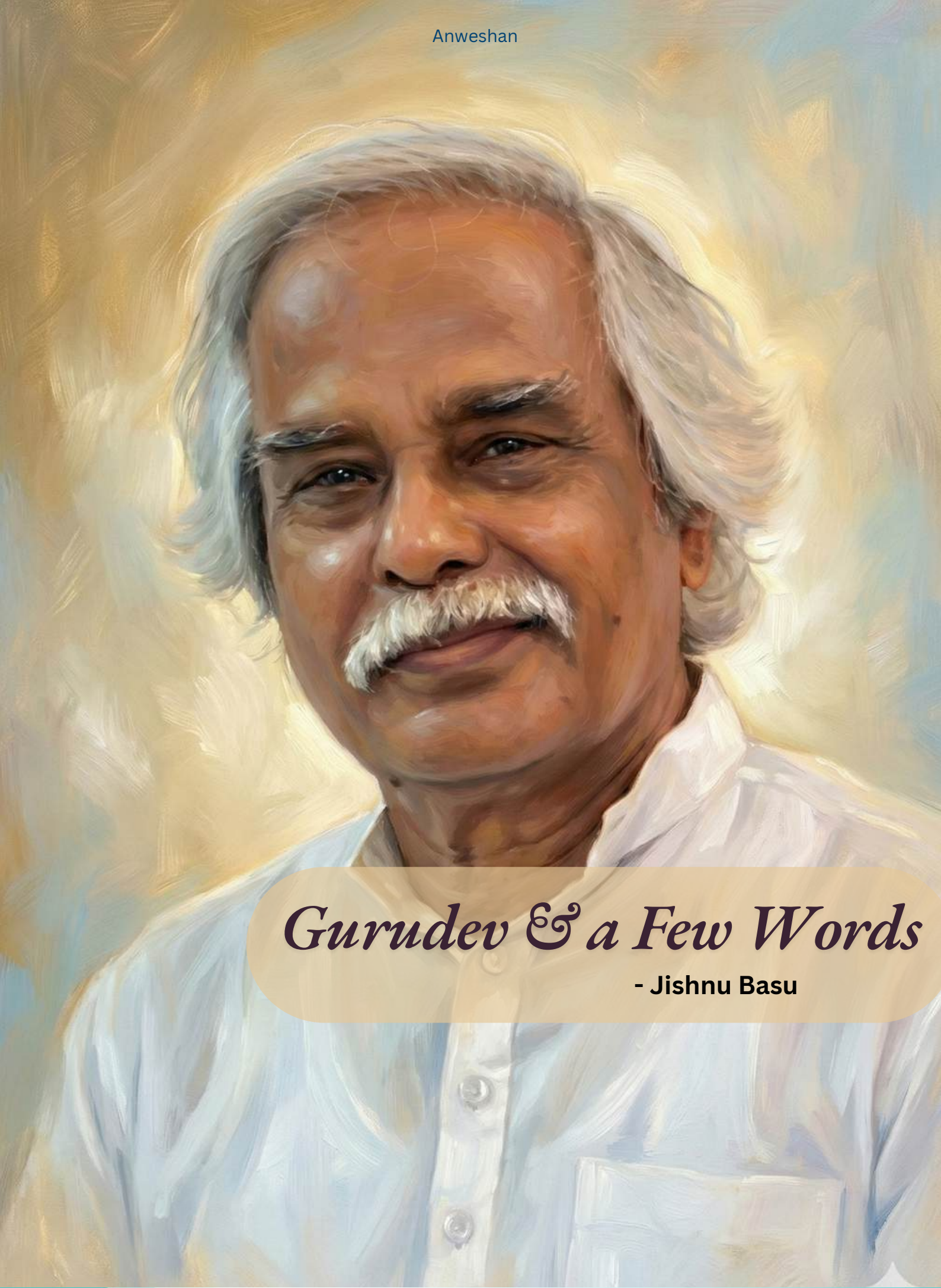

Gurudev & a Few Words

- Jishnu Basu

© 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

Bhakti is Shakti (ভক্তি ই শক্তি), the saying is very true. It is also true that Bhakti cannot be taught, it is a natural or automatic state. Through KriyaYog of Shri Lahiri Mahasaya through our revered Gurudev Shri Acharya Dr Sudhin Ray, the same Bhakti can be risen by cleaning the diamond that has dirt through lifetimes stored in the Granthis. Once the dirt has been cleansed then the diamond shines all of a sudden with purity and Jyoti shining forth through the KriyaVan.

Gurudev says, The spine is like a pipe with a few layers where dirt has been stored; cleaning the dirt the water through the pipe can pass clearly. Here the water can be linked through Praan (Atman) which then passes clearly through the Sushumna Nadi. Once reaching where it has to reach, Mind (মন) and Praan (আত্মা) meet and then everything happens automatically.

GuruKripa and effort with intensity, humility, someone who is a sadhu (a king of his sense organs and desires), without fear, of a calm loving nature are some things that are essential in KriyaYog. Swamiji says, " Nothing can be done in a day. Spirituality cannot be swallowed in the form of a pill. It requires hard and constant practice. The mind can be conquered only by slow and steady practice." Such is the path of KriyaYoga by Shri Lahiri Baba who always said, " Banat Banat Ban jayi."Reverence to the Guru and constant practice are the ways to sure success in the path of KriyaYog.

Bhagat Kabir says, (Guru Govind dou khade, kake lagu pay. Balihari guru aapne, Govind diyo batay.) "Both the Guru and God are standing before me, whose feet should I touch first? I bow to the Guru, for it is the Guru who showed me the way to God.

Once I was sitting with Gurudev and Gurudev said, "Jishnu think that SatyaNarayan puja is going on in somebody's home, and the person's Gurudev suddenly comes to visit the disciple. Most people would ask someone to make the Guru sit because puja is going on but how many will think that SatyaNarayan himself has come and will go to receive the Guru even in between the Puja? It is so true what Gurudev has said here." True Samarpan and Saranagati is such that the disciple loves the Guru only for the sake of loving the Guru not for any higher Kriyas or to seek anything else. Such is the love that Sudama has for Shri Krishna and all the lovers of God have for their Ishta and Guru.

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

I consider myself a simple Kriyavan who has been blessed to have a Guru like Shri Shri Acharya Sudhin Ray Mahasaya who is Shiv Vishnu Brahma himself. I consider myself lucky and blessed to have the grace to visit him and see him in this birth. When I look back at the past few years and how Gurudev has guided me it is as if now I am starting to learn what true love is. For instance from childhood, I had been searching for love from everything and everyone around me but never felt complete love until I met my Gurudev. Perhaps it is the same complete love that Gurudev felt and continues to feel from Param Gurudev, Shri Shri Maheswari Prasad Dubey ji. My Gurudev continues to teach me that true love is inside of me and I am complete in myself. Whatever pratice I can do and how I feel now is all due to the blessings of my JagadMaa, GuruBaba Babaji, our Guru lineage.

Gurudev, when I personally see you with what the eyes and senses can grasp, I don't know what to say by words. Most of the times I'm just silent and blank, any questions I have you automatically answer through that silence and your beautiful gaze as though it is Omkar gazing at me. Through the Bindu in Omkar you are that passage who guide us even in the Sushma and Karan sharira. I have finally understood there is no need to understand anything but to just love with complete surrender. Thank you for accepting me as your disciple and I hope someday I can truly be a disciple to you. The complete gyan of the Shastras, are transferred through you in such simplicity. I used to wonder how can I get that complete love and knowledge as is there in Karma Yog, Bhakti Yog, Gyan Yog and RaJaYog but you teach me and everyone that through silence and such simple words. The only other example I know who did this is Shri RamaKrishna, who is Rama and Krishna at the same time. If the MahaMantra, the Gayatri Mantra and Maha Mrityunjay Mantra were to be chanted, understood and felt at the same time then it is you Gurudev. I don't know how many things in my own personal life has happened till now and I can only call them miracles but this I know that the power behind that has been only your Kripa. Through hardships help me understand these are lessons that the need to learn and through the good times be my guide that with the Suddhi Buddhi which you teach I can keep going forward in life and death of the body.

My sincere and humble Pranams at your feet GuruBaba

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

KRIYA DIKSHA

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

KRIYA DIKSHA

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

KRIYA DIKSHA

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

THE GRACE DISGUISED AS ANGER

Sudeep Chakravarty

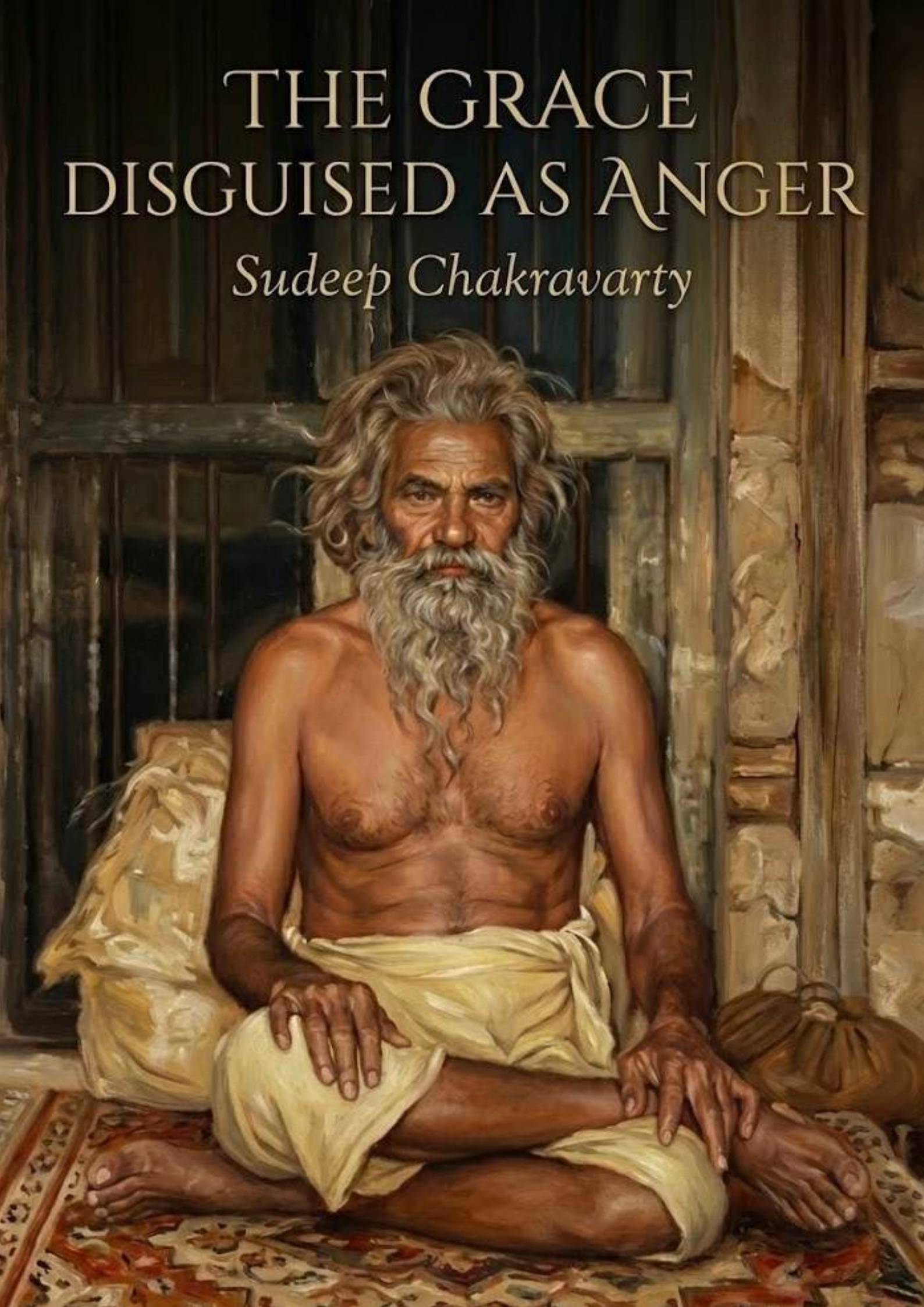

I heard this profound incident during a discourse by Swami Rajendradas Ji Maharaj, the current head of the Malook Peeth in Vrindavan. He recounted a personal experience that took place years ago during the festival of Ram Navami.

At that time, Rajendradas Ji was a young saint and a rising scholar, deeply adept in Vedic rituals and the scriptures (Vangmaya). He was the picture of a well-decorated and learned Pandit—a status that most Sanskrit scholars dream of achieving. Even his Guru, the revered Pahari Baba, seemed satisfied with his academic progress.

The day before Ram Navami, Pahari Baba summoned him and gave him a specific instruction: "Come to the ashram tomorrow to perform the Ram Puja. You will handle the rituals, including the bathing (Abhishekam), ornamentation (Shringar), and dressing the deity in new clothes. Be here at 10:00 AM."

"I will be there on time," Rajendradas Ji promised.

The next morning, he arrived at the ashram at 9:45 AM, believing he was fifteen minutes early. Pahari Baba was seated there, addressing a large gathering of saints. However, the moment he laid eyes on Rajendradas, the Guru's demeanor changed instantly. He erupted in anger, unleashing a torrent of harsh criticism in front of everyone.

"Is this the time to come?" Pahari Baba roared. "You think you are a great Pandit? You are nothing! You are just a bundle of ego. You think yourself a scholar, but Lord Ram does not need your mantras and rituals. Get out of my ashram and never come back, you egotistical Pandit!"

Rajendradas Ji was stunned and deeply hurt. He could not understand why his Guru had suddenly turned against him or why he was being humiliated so publicly. Yet, despite the barrage of abuses and the command to leave, he did not move an inch. He stood there, head bowed, accepting the words.

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

Exactly at 10:00 AM, Pahari Baba rose from his seat and walked toward the temple. He entered the Garbhagriha (Sanctum Sanctorum) alone and began performing the rituals himself. Rajendradas Ji quietly followed him, standing just outside the temple door, and began chanting the accompanying mantras from the threshold.

Seeing Rajendradas standing outside, faithfully reciting the mantras despite the humiliation, Pahari Baba called out from inside, "Come in and finish the rituals."

Rajendradas Ji entered, completed the entire puja, and prostrated before his Guru. Pahari Baba said nothing, and Rajendradas Ji, still shaken, did not dare ask the reason for the earlier outburst.

Confused and heavy-hearted, Rajendradas Ji went to his Sanyas Guru (the teacher who had initiated him into the monastic order) and recounted the entire event.

His Sanyas Guru smiled knowingly and said, "Great souls (Mahapurush) often perform this kind of Leela (divine play) to impart a message to their loved ones." He then asked, "How long did it take you to finish the ritual?"

"About an hour," Rajendradas Ji replied. "It finished around 11:00 AM."

"And do you know what the auspicious time (Muhurat) for the Ram Navami puja was?"

Rajendradas Ji contemplated for a moment, and suddenly, tears rolled down his cheeks. "The auspicious window was between 10:15 and 10:20 AM," he whispered.

"Exactly," the Sanyas Guru asked. "So, to finish by 10:20, what time should you have started?"

"I should have been there by 9:15 AM to start the preparations," Rajendradas Ji admitted, weeping. "It was my fault. I was late."

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

That evening, he returned to Pahari Baba's ashram. The great saint was sitting in silence. Rajendradas Ji fell at his feet, crying, and said, "Gurudev, I know my fault now. I was late. Please forgive me."

Pahari Baba looked down at him gently. "Don't cry," he said softly. "I did not scold you for your timing."

He continued, "It was a test. If you had walked away today after my scolding, I would never have allowed you to visit me again. I know you are a scholar, and I wanted to check if that scholarship was inflating your ego. I humiliated you in front of dozens of people to see if your pride would revolt. I tried every word to provoke your ego, yet you remained silent and stayed to serve. You passed the exam. I am happy; I have trained my disciple well."

Author's Note: This story was retold from a discourse in Hindi. If I have missed any subtle details in translation, I seek the reader's forgiveness.

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

Blessings in the Hills

The Day Babaji Made His Presence Known

- Kush

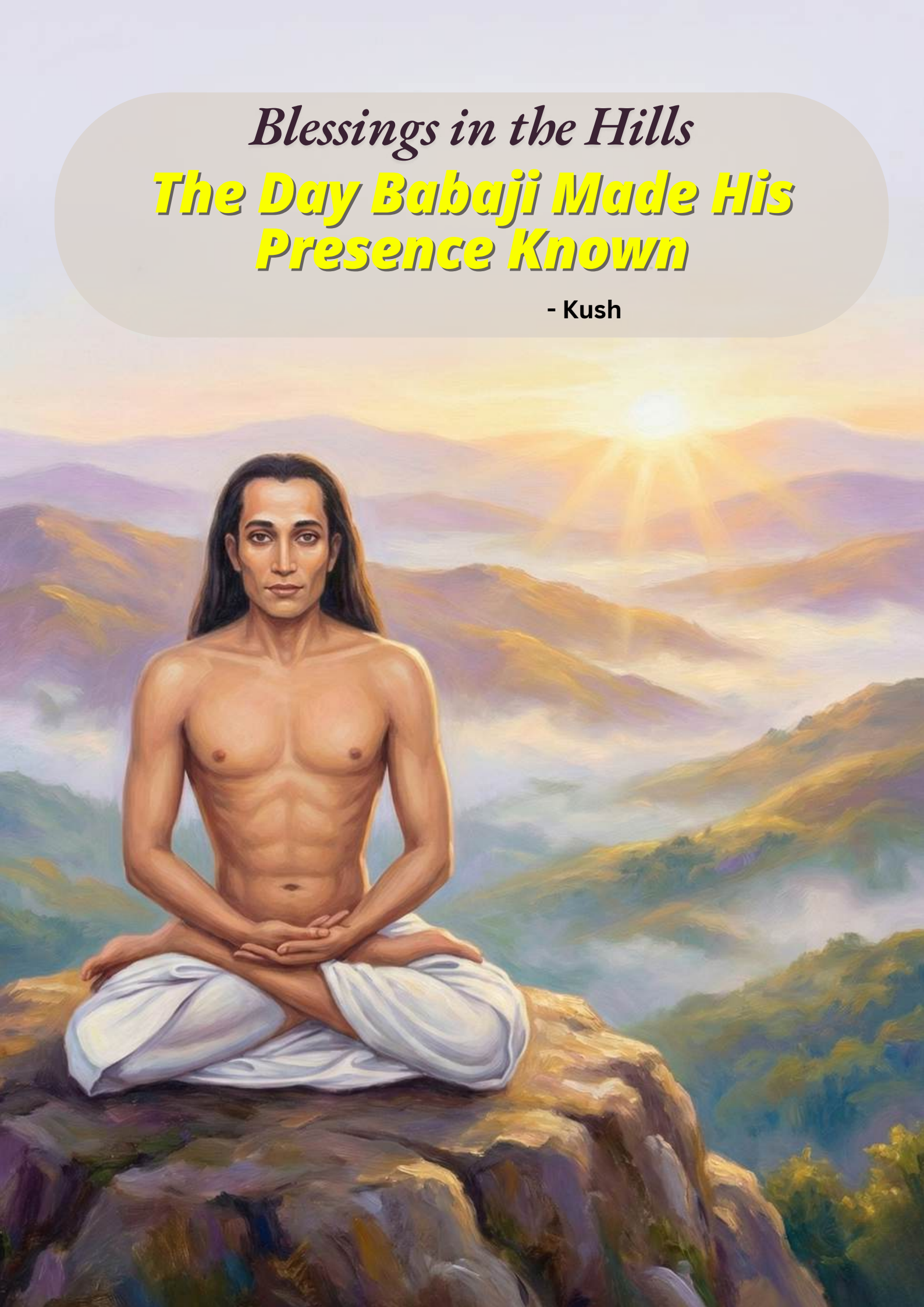

Last November, in what would become one of the most memorable weekends of my life, I set out with my gurubhai, Gautam, to visit the sacred Mahavatar Babaji caves near Ranikhet.

The timing couldn't have been more intense. Just a day before our trip, I faced one of the most testing moments in my family life. I won't dwell on that episode now—this is the story of our journey—but that emotional turmoil lingered within me as we prepared to travel.

Gautam arrived on Friday evening at Delhi Airport. I picked him up, and without delay we began our long drive toward the Himalayas. Somewhere along the way we decided that before visiting Babaji's caves, we would stop at Kainchi Dham, the ashram of Neem Karoli Baba.

Through the Plains and Into the Hills

Our drive took us through Ghaziabad, Moradabad, and Haldwani, and from there, into the serene hills toward Nainital and Ranikhet. Ranikhet felt almost untouched—a quiet, pristine land wrapped in pine forests and crisp Himalayan winds. Driving through the cantonment area was breathtaking, like moving through a postcard untouched by time.

Kainchi Dham, the ashram of Neem Karoli Baba

We reached Kainchi Dham at around 2 a.m. The cold pierced through the darkness, so we rested in the car for a few hours. Darshan began around 6:30 a.m., and we were among the first visitors. The silence, the morning chill, the ringing of the aarti bells—everything seemed soaked in a divine stillness. For the first time in days, my heart felt a moment of peace.

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

Toward the Sacred Cave

After leaving the ashram, we drove toward the Babaji caves. Our hotel, a simple government guest house, was around 10–15 km from the cave trail. We managed an on-the-spot booking and, despite being exhausted and barely fed, we decided to visit the slopes leading to the caves that same afternoon.

At the start of the trail, I parked the car and we began climbing. A man stood nearby, speaking to no one in particular, but he fell silent as soon as he saw us. Next to him was a small open hut with a picture of Mahavatar Babaji hanging from the roof. There was an indescribable energy in that place—something quiet but powerful.

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

A YSS sign guided us upward. After a steady climb, we reached the meditation hall where people rested before the final ascent. After catching our breath, we continued and finally reached the cave.

Inside, a Westerner was deeply absorbed in meditation, his face glowing with a peaceful smile, almost radiating bliss. Gautam and I meditated for about 15–30 minutes before stepping outside.

Incident 1: The Babaji Photo Turning Toward Us

As we descended, exhausted and hungry, we approached the hut with Babaji's photo again. Gautam walked ahead of me.

Without warning, the photo of Babaji slowly rotated toward Gautam and paused—almost as if acknowledging him.

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

Moments later, it turned toward me and stopped again, silently and gracefully—as if blessing us both.

The air was still. There was no wind, no explanation. Only silence and a sense of being watched over.

Rest and Reflection

A little further down, we heard a loud roar echoing through the forest. Gautam insisted it was a bird, but something about the sound felt deeper, heavier. We let it pass, reached the road, drove about 10 km, and finally stopped for lunch at a dhaba.

Back at the guest house, we rested deeply. My mind still carried the burden of my family situation, but something within me had started to soften.

A Red Sunrise and a Subtle Blessing

At dawn, I witnessed something I had never seen before—a blazing red sun rising over the hills. The sight felt surreal, like nature itself was offering reassurance.

We packed our bags, clicked a few photos, and went to settle the bill.

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

Incident 2: The Cash Matching Roughly

We tried paying through UPI, but nothing worked. No network, no signal. We checked our wallets reluctantly.

To our surprise, Gautam and I had almost the exact amount of cash required. On a trip where we hardly planned expenses and carried little cash, this felt like another gentle sign that we were being guided.

We paid, thanked the staff, and began our drive back through the winding hills.

Incident 3: The Sudden Stop at Pilot Baba Ashram

As we drove, Gautam casually mentioned that he wanted to visit Pilot Baba Ashram someday if we ever came across it.

At that exact moment, something made me look to the left, and without thinking I shouted: "Stop the car—this is the ashram!"

We had arrived at the right place without searching for it at all. Inside, we offered prayers at the Shiv-Shakti Linga, and I felt a deep wave of inner bliss wash over me—quiet, powerful, unmistakable.

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

The Journey Home

By evening, we were back in Delhi. And as if touched by unseen hands, the family crisis that had troubled me so deeply was resolved completely—calmly, smoothly, as though it had never happened in the first place.

Looking back, the journey feels like a string of quiet miracles—three signs, three moments of grace—that reminded me we were never alone.

Truly, it felt like the blessing of Babaji.

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

Asatoma Sadgamaya Shloka and Kriya Yoga

A Journey from Illusion to Truth

- Swapnalekha Guha

ॐ असतो मा सद्गमय ।
तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
मृत्योर्मा अमृतं गमय ।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

"Lead me from the unreal to the real,
Lead me from darkness to light,
Lead me from death to immortality.
Om peace, peace, peace."
— **Brihadaranyaka Upanishad (1.3.28)**

This timeless shloka has echoed through my life: a daily school prayer, a moment of collective reflection, and a chant whose meaning deepens with every repetition. Over the years, as its words accompanied my journey, their true essence has gradually permeated my being.

Relevance for Kriya Yoga Practitioners

As GuruBaba teaches, Kriya Yoga's ultimate goal is to stabilize pranic energy through pranayama, as suggested by Yogiraj Shyamacharan Lahiri Mahasaya.

Once a kriyavan attains this state, they become free from the binds of Maya, gaining answers to the deepest questions and perceiving the nature of creation itself. By stabilizing pranic energy, one uncovers the ultimate source of existence and becomes one with the Creator.

Through regular practice, Kriya Yoga systematically purifies body and mind, dissolving layers of delusion and ego that veil our true essence. The shloka's invocation to move from "asat" (untruth, illusion) to "sat" (truth, reality) perfectly mirrors Kriya Yoga's objective: awakening to one's true nature, a pure consciousness existing beyond transient appearances. Each breath and meditation session is a journey deeper into the real, peeling away the layers of the unreal.

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

The movement from "tamas" (darkness, ignorance) to "jyoti" (light, knowledge) parallels the yogic process of illumination. Through pranayama and meditation, practitioners attain higher awareness—the mind quiets, and wisdom's inner light begins to shine. Ignorance dissolves, revealing unity at the core of existence.

Finally, progression from "mrityor" (death, fleeting body) to "amritam" (immortality, eternal Self) embodies Kriya Yoga's ultimate promise: self-realization. The seeker transcends ego, overcomes the limitations of physical existence, and attains oneness with the infinite and timeless.

A Universal Mantra Across Cultures

This ancient shloka transcends spiritual boundaries and finds its resonance in cinema, media, and communities worldwide:

- The mantra punctuates the closing sequence and soundtrack ("Navras," "Neodämmerung") of The Matrix Revolutions, symbolizing transformation and awakening.
- In the Bengali film Khaad, Kaushik Ganguly has composed a moving soundtrack titled "Asatoma Sadgamaya."
- The Malayalam movie Chinthaamani Kolakkes (2006) weaves the mantra into its score, reinforcing the narrative's spiritual undertone.

Conclusion: Living the Mantra

For every Kriya Yoga practitioner, this shloka remains both invocation and meditation—ever-present and ever-relevant. It reminds us of the spiritual path's true purpose: to transcend illusion and duality, abiding in the truth and bliss revealed through devoted practice.

Let these words echo beyond ritual, inspiring transformation in daily life. Whether chanted in quiet meditation or encountered in the world's stories, Asatoma Sadgamaya remains a guiding light for the soul—a bridge from darkness to radiant illumination.

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

A vital aspect of this journey toward light is Guru Grace (Guru Kripa). Receiving the grace of a true Guru awakens powerful shifts in life. Grace is sensed—an inner blessing that can elevate one to the highest pinnacles of realization.

Jai GuruBaba, GuruMa.

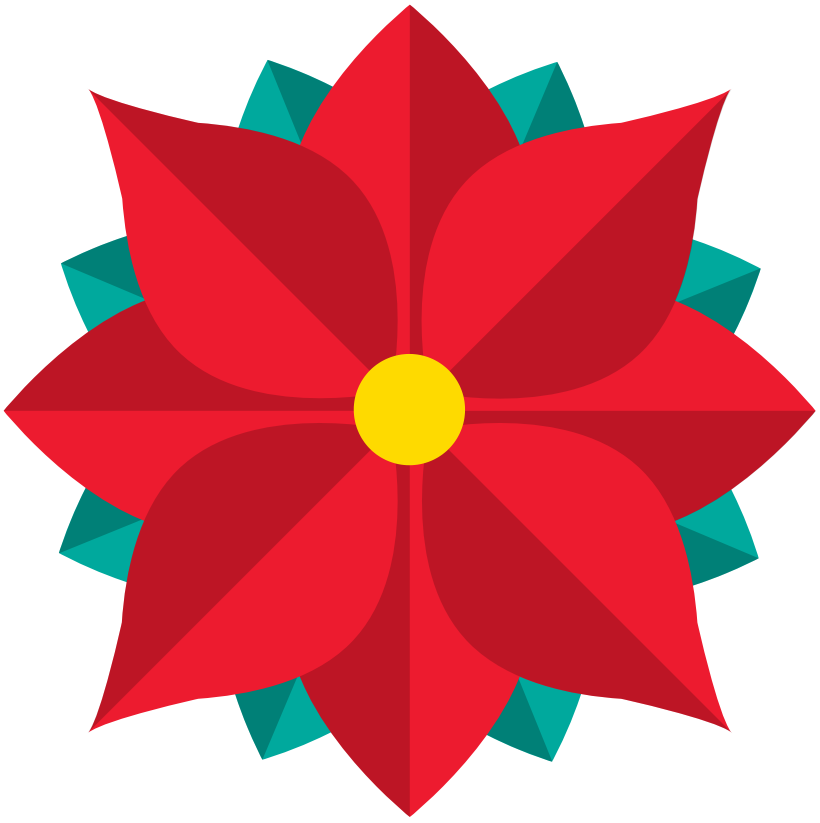

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

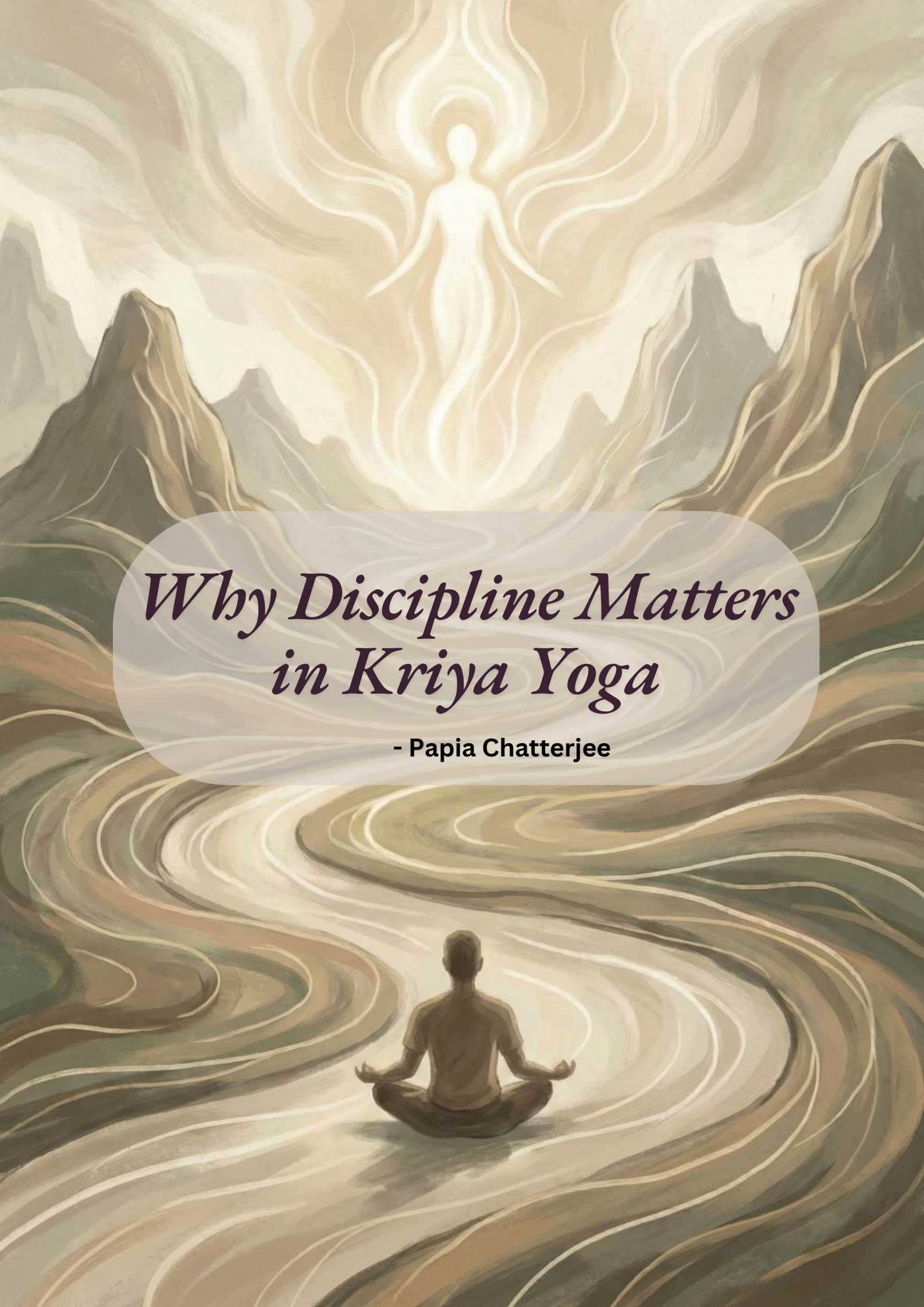

Why Discipline Matters in Kriya Yoga

- Papia Chatterjee

The word discipline often creates a certain picture in the mind—one where it is equated with coercion, force, or rigidity.

In my initial days of Kriya practice, like many others, I was drawn to the promise of stillness, not to the idea of showing up every day. It took time for me to understand that discipline in Kriya Yoga was not about forcing myself into practice, but about returning—patiently and imperfectly—to the breath. Over a period of more than a decade, I have gradually come to realize that discipline is actually closer to commitment: showing up, or making space, every single day.

Many of us carry a rather romantic idea about Kriya Yoga—that it is a path leading to divine visions, extraordinary experiences, or heightened sensations. There are also some spiritually egoistic notions that surface, where one believes that initiation itself will instantly grant mastery over prāṇa, and that samādhi will follow in a matter of seconds. What most of us fail to realize is that there are no shortcuts to anything truly worthwhile in life. And if there are, one can be fairly certain that they will not be lasting. The same holds true for Kriya Yoga.

If, after a few days or even months of practice, one begins to feel that nothing concrete is happening, it is often because progress in Kriya is subtle and largely invisible—something that quietly tests one's patience.

Consider a person who is underweight and wishes to build a strong, well-toned body. Would his body transform the very day he steps into a gymnasium? Absolutely not. Visible results may take a year, or even longer. Yet, one thing is certain: if he remains consistent in his effort, there will come a day when his body reflects the work he has put in. In much the same way, every Kriya Yoga practitioner needs to build discipline and consistency to witness changes in their spiritual life. Each person's tanmātra is different, and accordingly, each person's progress will unfold in its own time—provided discipline and consistency are not compromised.

A regular and consistent practice of Kriya Yoga gradually leads to subtle shifts in breathing that reduce reactivity.

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

Situations that once triggered strong responses become easier to hold. Kriya works beneath the surface of the mind. Without regularity, these subtle changes do not settle. Just as water shapes stone through repetition, breath reshapes awareness through consistency.

Personally, there have been many mornings when discipline looked less like devotion and more like a quiet negotiation with myself. The world waited, the mind rushed ahead, and yet the mat remained where it had been the day before. Sitting down on such mornings taught me that discipline is not always heroic—it is often ordinary and almost unnoticed. There were phases in my practice when discipline felt heavier than inspiration, when the breath resisted, the mind wandered, and stillness felt distant. Yet it was precisely during those uninspired days that I learned what discipline truly meant—not persistence toward an experience, but faith in the process itself.

Over time, I realized that whatever depth I experienced in Kriya Yoga did not arrive on days of heightened enthusiasm, but on days shaped quietly by discipline. The practice deepened not because I tried harder, but because I returned—day after day—without expecting anything extraordinary.

Based on my personal experience, I can say with conviction that discipline slowly builds trust—both in the practice and in oneself. The fruits of discipline in Kriya Yoga often appear late, but when they do, one realizes how far one has travelled from the starting point.
My key takeaways after all these years of practice:

- Showing up on dull days matters more than inspired days.
- Trust grows when we keep our inner appointments.
- Over time, discipline reduces inner negotiation and resistance.
- Eventually, discipline stops feeling like effort.

With time, discipline feels less like effort and more like support. It helps you stay with the practice on dull days, through doubt, and during long phases when nothing seems to move. And then, without making a fuss, something shifts. The breath softens, the mind settles a little, and life feels easier to handle. In Kriya Yoga, discipline is not about mastering the breath; it is about learning to return to it—again and again—until returning itself becomes natural.

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

My Journey with Kriya Yoga: Bridging Body, Mind, and Spirit

- Rajesh Jha

Before I discovered Kriya Yoga, I had explored many forms of meditation. Each had its benefits, but none led me as deep as Kriya Yoga did. Meditation often focuses on the mind, but the mind is subtle and challenging to master. Kriya Yoga, however, starts with the body, then the nervous system, and finally the mind, making it a holistic journey inward.

For example, practices like navi kriya help turn your senses inward, calming the body and the nervous system. Then, focusing on the breath and the spinal cord activates the vagus nerve, bringing you into a state of deep relaxation. As the body and nervous system calm, the mind can settle. It's like stopping the pedaling of a bicycle: without emotional "pedals," thoughts slow down and true stillness emerges.

What sets Kriya Yoga apart is that it meets you where you are. Lahiri Mahasaya taught that consistent practice naturally brings ethical living (yama and niyama) into alignment, unlike other techniques that require strict rules upfront. With the grace of the guru and the initiation (diksha), Kriya Yoga acts like a spark plug igniting spiritual evolution.

Ultimately, Kriya Yoga is perfect for householders. You can manage daily life, family, and work while still evolving spiritually without renouncing the world. In fact, facing life's challenges helps you transform and find that inner stillness amid everyday life.

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

Dear seekers!

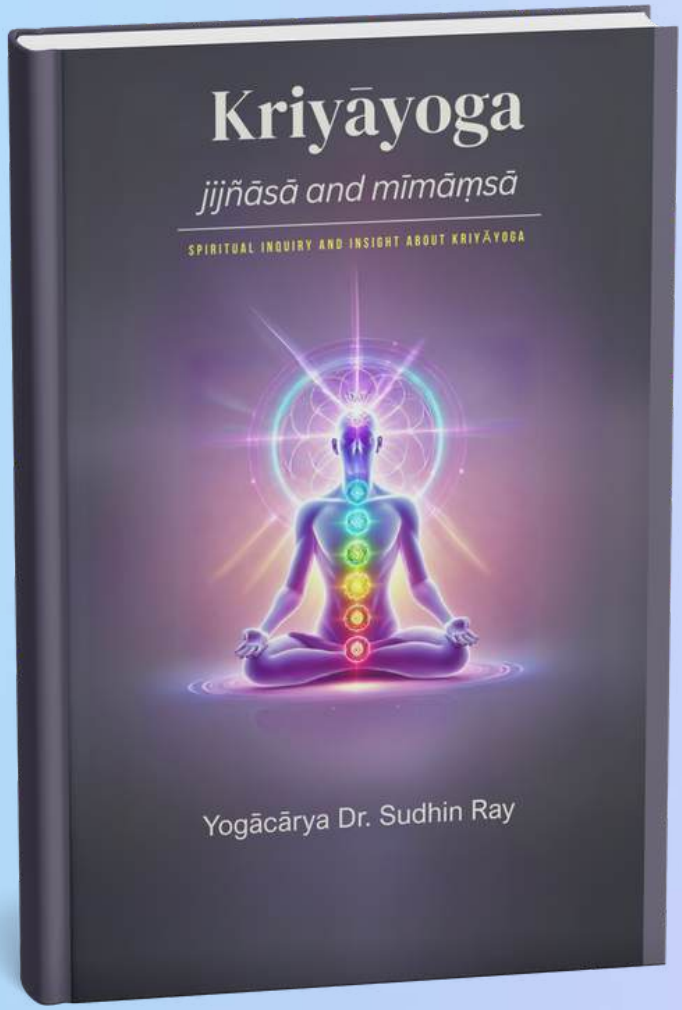

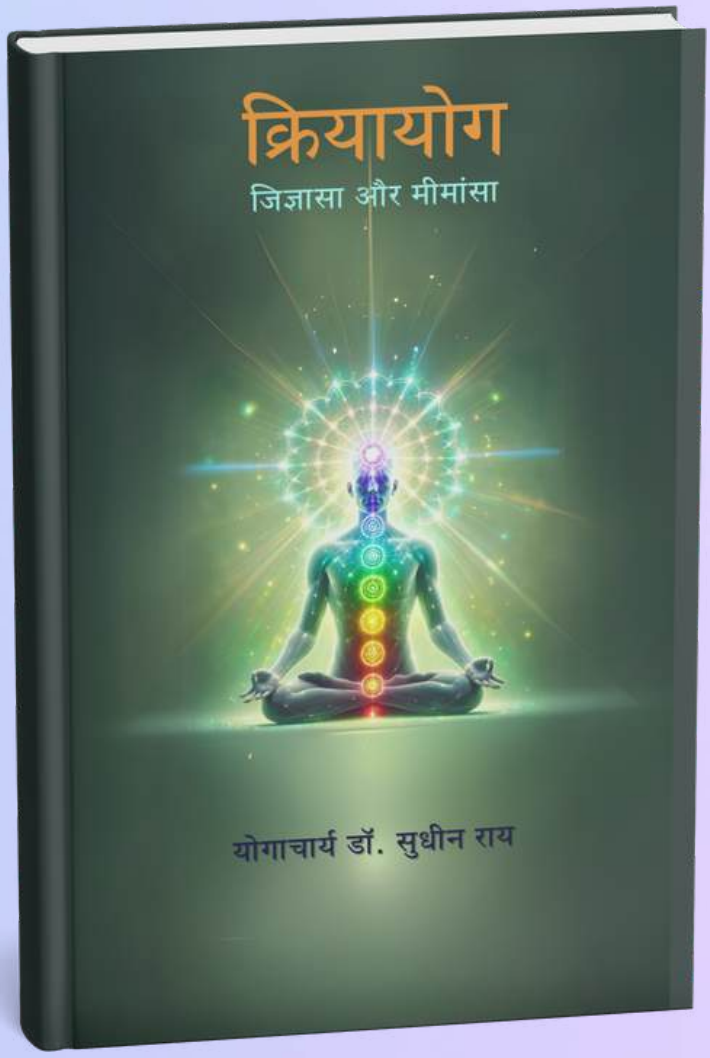

Gurudev's renowned Bengali book "Kriya Yoga: Jiggyasa O Mimangsha" is now available in Hindi and English. The books are available for purchase from Ashram Website!

"Durga Puja Celebration @ RYKYM"

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

ওঁ গুরু

-অনিতা মুখার্জী

গুরু ব্রহ্মা, গুরু বিষ্ণু,
গুরুদেব মহেশ্বর।
গুরু মাতা, গুরু পিতা,
গুরু হলেন সর্বদাতা।।
গুরু জ্ঞান, গুরু গীতা,
গুরু জীবের পরিত্রাতা।।
গুরু ভক্তি, গুরু মুক্তি,
গুরু মোদের সর্বশক্তি।
'কূটস্থ চৈতন্য' রূপে
গুরু বিরাজেন "অজ্ঞা চক্রে"।
ব্রহ্মা রূপে সৃষ্টি করেন,
বিষ্ণু রূপে পালন করেন,
সংহার রূপী শিব হয়ে,
শোধন করেন সর্বজনে।।
গুরু রূপে গ্রহণ করেন,
উদ্ধার করেন সন্তানদের।।
জয় গুরু, জয় গুরু, জয় গুরু

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

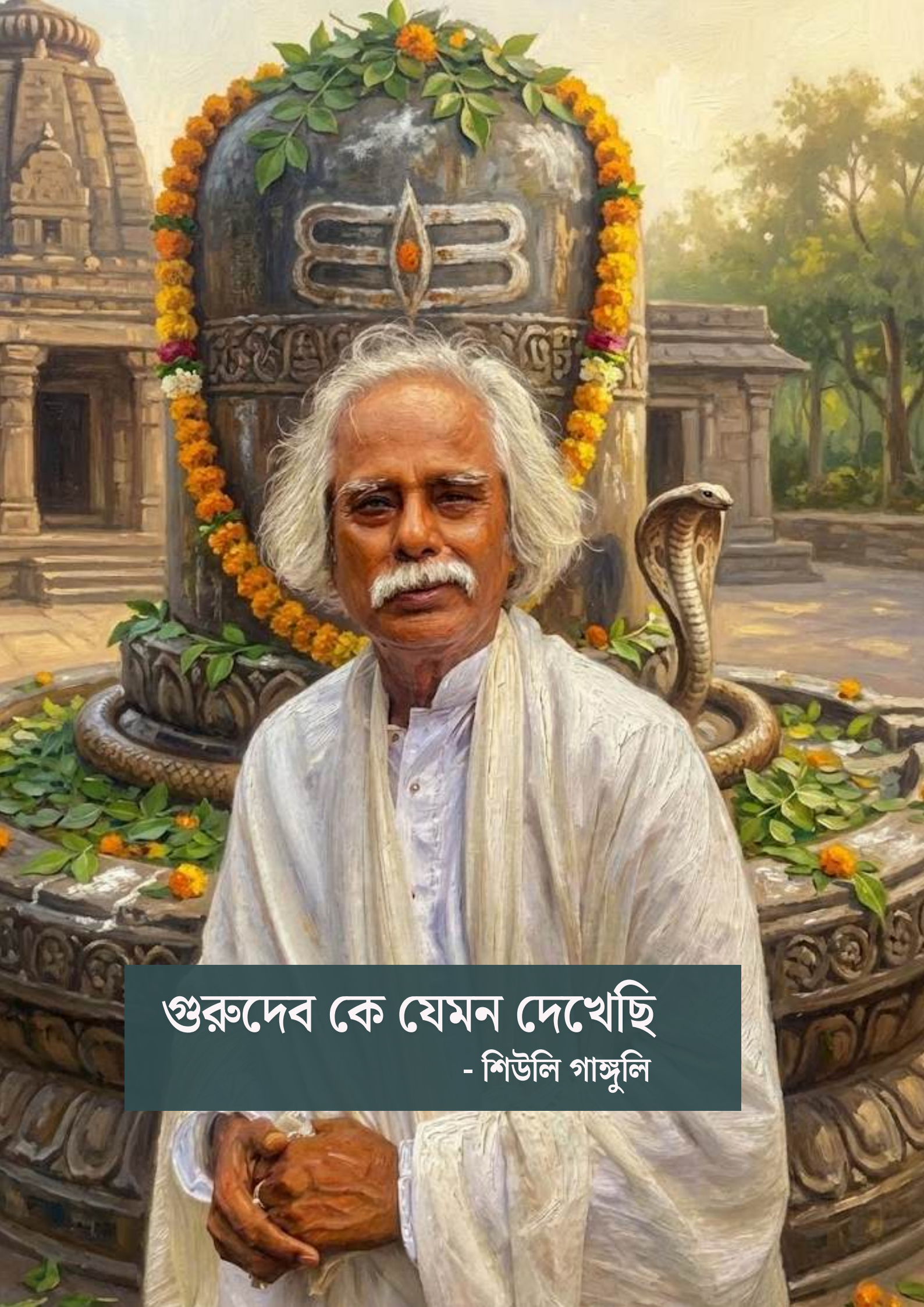

গুরুদেব কে যেমন দেখেছি

- শিউলি গাঙ্গুলি

নিবেদন

গুরুদেব এর স্বরূপ ভাষায় আঁকতে পারি এমন ক্ষমতা আমার নেই। তবু তাঁর কৃপা সম্বল করে তাঁকে যতটুকু দেখেছি তাই লেখার এই ক্ষুদ্র প্রয়াস। তাঁর সদা প্রসন্নময় ভাব, তাঁর শুভ্র করুণাময় মূর্তি যা কিনা হৃদয়ে অঙ্কিত হয়ে থাকে তা লিখে বোঝাতে গিয়ে কোথাও যদি কিছু ত্রুটি হয়ে থাকে সে জন্য আগেই মার্জনা ভিক্ষা করে রাখলাম।

প্রভুর চরণে
শিউলি গাঙ্গুলি

প্রথম পরিচয়

সেদিন ছিলো দুর্গা পূজার ষষ্ঠী, 2012 সাল। এর আগে আমি কখনও বাড়ীর দুর্গা পূজা দেখিনি, যা দেখেছি সবই সর্বজনীন দুর্গোৎসব তাই ঐন্দ্রী ওর বাড়ীতে দুর্গাপূজা তে আমাকে যেতে বলেছিল। আমার দুই ছোটো মেয়ে নিয়ে আমি গেলাম দুর্গাপূজা দেখতে। সেই প্রথম বাড়ির দুর্গাপূজা দেখার সাথে সাথে সেই প্রথম দেখা হলো গুরুদেব এর সাথে। সেই শান্ত , সমাহিত স্নিগ্ধ রূপ! প্রথম দেখাতেই মনে হলো গুরুদেব কে আগেও দেখেছি - খুবই চেনা মনে হচ্ছে কিন্তু আগে সত্যিই কখনও দেখা হয়নি।

প্রনাম করলাম, কিছু সাধারণ কথার পর গুরুদেব জানতে চাইলেন আমার দীক্ষা নিতে ইচ্ছা হয় কিনা! শুনে খুব ভয় পেলাম, বললাম,"নিতে তো ইচ্ছা হয় কিন্তু ভয় করে নিতে। দীক্ষা নিলে যদি আর সংসার করতে না পারি?" গুরুদেব হাসলেন, বললেন "তোমাকে কি আমি আনন্দময়ী মা হতে বলেছি?" শুনে আমার ও লজ্জা লাগলো, চুপ করে রইলাম। আসলে কৈশোর বয়স থেকেই আমি রামকৃষ্ণ কথামৃত, বিবেকানন্দ রচনাবলী এইসব পড়ি, স্বামীজীর লেখাতে ধ্যান, রাজযোগ সমন্ধে পড়ে সে গুলো করবার ও প্রবল ইচ্ছা হতো যদিও জানতাম প্রকৃত গুরু ছাড়া এইসব করা যায় না কিন্তু মনে একটা দ্বিধা ছিলো - মনে হতো ইশ্বর কে যদি খুব মন দিয়ে ডাকতে যাই তাহলে সংসারের হিসাব নিকাশ তো আর করে উঠতে পারবনা! চাওয়া পাওয়ার ঊর্ধ্যে উঠে গেলে সংসার করবো কিভাবে? আমার দীক্ষা না নিতে চাওয়ার কারণ শুনে গুরুদেব হেসেছিলেন, বলেছিলেন "তোমাকে আমি দীক্ষা নিতে বলেছি, তোমাকে কি আমি আনন্দময়ী মা হতে বলেছি?" আজ ১০ বছরের ওপর হয়ে গেছে দীক্ষা নিয়েছি, আজ বুঝি গুরুদেব সেদিন কেন হেসেছিলেন, এতই কি সহজ চাওয়া-পাওয়ার উর্ধ্বে ওঠা! মহামায়া কি সহজে পথ ছাড়েন? তাঁকে ডাকার তাঁর সাথে যুক্ত হওয়ার চেষ্টা টুকুও যদি করা যায়, সেও গুরুকৃপারই ফল। সেই দিন দুবেজী মহারাজের লেখা "ক্রিয়াযোগ রহস্য" বইটি মা নিজে হাতে আমাকে পড়তে দিয়েছিলেন। ক্রিয়াযোগ সমন্ধে জানার জন্য। বইটির মধ্যে গুরুদেবের একটি ছবি লাগানো ছিল, আর তাতে গুরুদেব নিজে হাতে লিখে দিয়েছিলেন, "শিউলি গাঙ্গুলীকে গুরুদেবের আশীর্বাদ"।

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

বাড়িতে এসে বই থেকে ছবিটি খুলে আমি আমার পুজা র জায়গায় রাখি। মনে হয় আমার প্রাণের গভীর থেকে আমি জন্ম জন্ম ওনাকে চিনি, কি এক অপরিসীম টান সে ঠিক লিখে বোঝানো যাবে না। এরপর থেকে আমি প্রতিদিন পূজা করার সময় গুরুদেবের চরণেও ফুল দিয়ে পূজা করি। কিন্তু গুরুদেবের ছবির দিকে বেশিক্ষণ তাকাতে পারি না, তাকালেই মনে হয় উনি আমার দিকে চেয়ে হাসছেন, উনি আমাকে ডাকছেন। একদিকে প্রবল টান গুরুদেবের কাছে যাবার অন্যদিকে সমানে মনে হতো সাধনা করতে গেলে সংসার আর করে উঠতে পারবনা , সংসার থেকে মন উঠে গেলে বাচ্চারা ছোট, ওদের মানুষ করব কিভাবে!

দুর্গা পূজার ষষ্ঠী 2013

মাঝে এক বছর কেটে গেছে। আমার দ্বিধাগ্রস্থ মন দীক্ষা নিয়ে উঠতে পারেনি, আবার একটা দুর্গাপূজার ষষ্ঠীর দিন এসে গেছে। এবারেও একইভাবে গুরুদেবের বাড়িতে গেছি। তবে এবার শুধু আমি নয়। আমি আমার দুই বাচ্চা আর আমাদের আরেক বন্ধু, সেও এসেছে তার দুটো ছোট বাচ্চা নিয়ে। গুরুদেবের সাথে আমরা সবাই কথা বলছি, ইচ্ছা শক্তি কি ধ্যান কি এইসব প্রসঙ্গে। অন্যদিকে আমাদের সবকটা বাচ্চা সমানে দৌড়াদৌড়ি করতে করতে একদম ছোটো জন যে, সে রাস্তায় চলে গেছে। অবাক হয়ে দেখলাম আমরা মা হয়েও কথা প্রসঙ্গে অন্যমনস্ক হয়ে খেয়াল করতে পারিনি হুড়োহুড়ি করতে করতে বাচ্চাগুলো রাস্তায় চলে যাচ্ছে কিন্তু গুরুদেব ঠিক খেয়াল করেছেন, বললেন "তাড়াতাড়ি যাও , ওকে ধরো , ও রাস্তায় চলে যাচ্ছে।"

বুঝতে পারলাম যিনি ঈশ্বরের সঙ্গে যুক্ত থাকেন তাঁর সংসার আমাদের থেকে অনেক অনেক বড়। তিনি সকলের খেয়াল রাখেন। তিনি সকলের আশ্রয়স্থল হন। পরবর্তীকালে যত গুরুদেবকে দেখেছি তত বুঝেছি তিনি মহীরুহের মতন তাঁর সমস্ত শিষ্য শিষ্যাকে তাঁর কৃপায় আশ্রয় দেন। আর মূর্খ আমি ভাবছিলাম দীক্ষা নিলে যদি সংসারে মন না দিতে পারি ! পরবর্তীকালে গুরুদেবের কাছে দীক্ষা নেবার পর বুঝেছি দীক্ষা নিলে, ক্রিয়া করলে আমাদের মন উচ্চতর উপলব্ধিতে যুক্ত হয় , যাতে আমরা সংসারের সংকীর্ণ "শুধু আমার" ভাবনা থেকে মুক্ত হয়ে যাই। স্বার্থ চিন্তা যত কম হয় সংসারও তত সুন্দর হয়। আমার দ্বিধাগ্রস্ত মন গুরু কৃপায় স্থির হয়ে যায়এবং 2013 সালে নভেম্বর মাসে গুরুকৃপায় আমার ক্রিয়া দীক্ষা হয়।

8/1/2017 রবিবার

আজ উত্তর পাড়াতে পরম গুরুদেবের জন্ম তিথির অনুষ্ঠান ছিল , সারাদিন ওখানেই ছিলাম। কি যে ভালো লেগেছে বোঝাতে পারবো না। প্রথমে ঠাকুরের গান তারপরে অনেক ভক্ত শিষ্য তাদের ক্রিয়া করার অনুভূতি ব্যাখ্যা করলেন। একজন শিষ্য ব্যাখ্যা করলেন , সামনে উপলব্ধির বোধে এগোতে গেলে নাভীক্রিয়া খুব ভালোভাবে করতে হবে। আর একটা কথা অনেকদিন ধরে ভাবতাম, আজ এই ভক্ত সম্মেলনে তার উত্তর পেয়ে গেলাম। অনেকদিন লক্ষ্য করেছি গুরুদেবের কাছে গেলে বিশেষ কিছু বলে উঠতে পারি না, কেমন যেন একটা আনন্দময় অনুভূতি হয় কিছু বলতে ইচ্ছা হয় না। আজ একজন জ্ঞানী ভক্ত বললেন,"সদগুরু কিভাবে বুঝবেন?

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

যাঁর কাছে গেলে মন স্থির হয়ে যায়, প্রশ্ন করতে হয়না, উত্তর নিজেই চলে আসে তিনিই সৎগুরু।" কথাটা শুনে খুব ভালো লাগলো।

6/10/17 শুক্র বার

মাঝে অনেক বারই গুরুদেব এর কাছে গেছি কিন্তু লেখা হয়নি। গতকাল লক্ষী পূজা ছিলো, দুদিন আগে গুরদেবকে ফোন করে আজকে যাবার অনুমতি নিয়েছিলাম। গিয়ে দেখি গুরুদেব একতলার শিব মন্দির প্রাঙ্গণ ধুচ্ছেন! হাসি মুখে বসতে বলে বললেন,' বিজয়া দশমীতে সবাই সিঁদুর খেলেছে তাই অনেক দাগ হয়ে গেছে সেই গুলো পরিষ্কার করছি "। অবাক হয়ে ভাবি যাঁর শত শত ভক্ত তাঁর চরণ ধোবার জন্য ব্যস্ত হয়ে থাকে তিনি নিজেই মন্দির ধুচ্ছেন! কিছু পরে আরো দুজন ভক্ত শিষ্যা এলেন। কথা প্রসঙ্গে গুরুদেব তাদের নিয়মের বেড়াজাল ভাঙ্গার কথা বলছিলেন। আমি তখন জানতে চাইলাম যে মেনে নেয় বা ভরসা করে থাকে সেই সঠিক কিনা! গুরুদেব বললেন," ভরসা করে থাকা ভালো। কিন্তু কাজ করে যেতে হবে"। অর্থাৎ ভরসা করার অর্থ এই নয় যে কাজ না করে ভরসা করে বসে থাকবে। তাঁর ওপর বিশ্বাস নিয়ে সমস্ত কর্ম সব সময় করে যেতে হবে।

13/7/2022 বুধবার

আজ গুরু পূর্ণিমা। উত্তরপাড়ার জয়কৃষ্ণ লাইব্রেরীতে অনুষ্ঠিত হলো গুরুপূর্ণিমার অনুষ্ঠান। গুরুদেবের চরণে শিষ্যভক্তরা পদ্ম নিবেদন করল আমিও করলাম। কতজন স্তোত্র পাঠ করলেন,ক্রিয়ার অনুভূতি ব্যাখ্যা করলেন খুবই ভালো লাগলো। সবশেষে গুরুদেব বললেন। গুরুদেব বলছিলেন তার ওপর পরম গুরুর নির্দেশ ছিল মানুষের মঙ্গল করবার, যারা তার কাছে আসবে তাদের মঙ্গল দেখবার। বাকিদের দেখার জন্যও তিনিই ব্যবস্থা করবেন। যাদের ভালো হচ্ছে তাদের শক্তিই গুড়ুদেবকে দিয়ে করিয়ে নিচ্ছে ভালো টা। আরও বললেন ঈশ্বরকে জানতে হলে গুরুকে জানতে হয় আবার গুরুকে জানতে হলেও ঈশ্বরকে জানতে হয়। ঈশ্বরই গুরুদেব কে বুঝিয়ে দেন।

20/1/2024 শনিবার

আজ গুরুদেবের বাড়ী গিয়েছিলাম। ইচ্ছা হয় প্রতিমাসে একবার করে তাঁর দর্শন করে আসি। আসলে গুরুদেবের বাড়ী আমার কাছে বেনারস ভ্রমণ! গঙ্গার ধারে প্রভু স্বয়ং বিরাজ করছেন,গেলে খুব আনন্দ হয়।

মনে মাঝে মধ্যে একটা দ্বিধা কাজ করে - একদিকে মনে হয় গুরুদেবের চরণে পূর্ণ সমর্পণই আসল,শুদ্ধা ভক্তি নিয়ে থাকবো আবার অন্যদিকে মনে হয় তৃতীয় ক্রিয়া ঠিকমতোহচ্ছে না ,আমি বোধহয় পারছি না ঠিক মতো!শুধু তাকে ভক্তি ভালোবাসা দিয়ে ডাকলেই হবে! তার দেখানো পথে ঠিক ভাবে এগোবার চেষ্টাও তো করতে হবে! গুরুদেব বললেন এসব না ভাবতে।

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

তাঁর কাছে বলতে, তিনিই করিয়ে নেবেন। জিজ্ঞাসা করলাম ঈশ্বর উপলব্ধি কি? গুরুদেব বললেন আনন্দময় অবস্থাই ঈশ্বর উপলব্ধির যখন সবার প্রতি ভালোবাসা আসবে যখন মনে হবে সবার মধ্যেই তিনিই আছেন সেই তো ঈশ্বরের উপলব্ধি।

11/5/2024 শনিবার

আজ গুরুদেবের বাড়ি গিয়েছিলাম। প্রভু দর্শন করলে মন খুব আনন্দে ভরে যায়। অনেক শিষ্য, শিষ্যা এসেছিলেন। গুরুদেবকে জিজ্ঞাসা করলাম যেই ভালোভাবে দু চার দিন ধ্যান করি, ক্রিয়া করি,তারপর আবার আলস্য এসে যায় , ঘুম থেকে উঠতে দেরি হয়ে যায়। কেন এমন হয়! মনে হয় আমি তমোগুণী। গুরুদেব বললেন, "যখন তুমি দেখতে পাচ্ছো তোমার তমোগুনকে তখন তুমি দর্শক। যখন আলস্য করে বসে থাকা হয়, তখন সেটা তমোগুন, সেটা থেকে বের হবার চেষ্টা রজোগুন আর যখন দর্শক হিসাবে সেটাকে বিশ্লেষণ করা হয় তখন সেটা স্বত্ত্বগুন।" গুরুদেব এও বললেন নিজের intellect অনুসারে প্রশ্ন করতে হয়, নিজেকে ছোটো করতে নেই ।

6/7/2024 শনিবার

আজ গুরুদেবের কাছে অল্প কয়েকজন মাত্র পুরানো শিষ্য ছিলেন, সামনের 21 তারিখ রবিবার গুরুপূর্ণিমা, সেইজন্য তারা সেইদিনের অনুষ্ঠান সংক্রান্ত বিষয়ে আলোচনা করছিলেন ।

গুরুদেবকে জিজ্ঞাসা করলাম, " মাঝেমধ্যে উৎকণ্ঠা কেন হয়? আবার মনকে শান্ত করে যখন ভাবি- যে হৃদয়ে প্রভুর বাস সেখানে উৎকণ্ঠ কেন ? তখন আবার সব ঠিক হয়ে যায়। কিন্তু এরকম হওয়া তো উচিত নয়। ধ্যান করি এমন কেন হবে?" গুরুদেব বললেন, " সব সময় আজ্ঞাচক্রে থাকো কি?" উত্তর দিলাম, "না বাবা, থাকি না। শুধু ধ্যানের সময় থাকি।" গুরুদেব বললেন, "তবে! মন যখন আজ্ঞা চক্রে থাকে তখনই স্থির থাকে, বাকি সময় তো মাঝের গুলোতেই ঘোরাফেরা করছে। তাই জন্যই উৎকণ্ঠাও আসছে। কিছু একটা হলেই ভাবছো, তুমি এটা পারবে কিনা! তাই উৎকণ্ঠাও হচ্ছে।এরকম হলে deep breath নেবে।" গুরুদেব আরও বললেন, "বেশী চিন্তা করোনা,সব ঠিক থাকবে।"

সমস্ত শিষ্যের ওপর গুরুদেবের অসীম ভালোবাসা, অপার কৃপা। শুধু ভালোবাসা বললে ভুল হবে, সম্মানযুক্ত ভালোবাসা। আমরা যে যত সামান্যই হই তবু তার কাছে সবাই সমান। সকলকেই তিনি সমান গুরুত্ব দেন। তাঁর কৃপা অনুভব করেনি এমন কোন শিষ্য বা শিষ্যা হয়তো নেই। সংসার এবং গৃহ ও যে দেবালয় হয়ে উঠতে পারে তা গুরুদেবকে না দেখলে ধারণা করতে পারতাম না।

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

21/7/24 রবিবার

আজ মিশনের গুরুপূর্ণিমার অনুষ্ঠান ছিল। খুব আনন্দে কাটলো আজকের দিন। ঠাকুরের গান ,কথা, শিবতান্ডব স্তোত্রপাঠ,বিষ্ণু সহস্র নাম ,গুরু বন্দনা, সবই হলো। ক্রিয়া নিয়ে অনেক শিষ্য খুব সুন্দর করে বললেন।গুরুদেব আজকের এই পূণ্য তিথিতে ওনার গুরুদেব সমন্ধে বলতে গিয়ে বললেন- উনি বলতেন, "কেন তোমাদের কাছে আসি, জানো! তোমাদেরকে গুরু বানাতে"।অর্থাৎ তোমরা প্রত্যেকেই নিজের গুরু হয়ে ওঠো। ক্রিয়া করে নিজেকে এমন জায়গায় নিয়ে যাও যাতে নিজেই নিজেকে সঠিকভাবে পরিচালনা করতে পারো।

13/9/2025 শনিবার

আজ গুরুদেবের বাড়ি গিয়েছিলাম, এখন প্রায় শনিবারই উত্তরপাড়া যাই। ভালো লাগে যেতে । কিছুই বলি না,গুরুদেব যা বলেন সবাইকে তাই শুনি। শুনতে ভালো লাগে। গুরুদেবের বাড়ির কাছে এলেই মনটা কেমন একটা ভালো লাগাতে ভরে যায়। আনন্দময় প্রভাবে মন আবিষ্ট হয়ে থাকে, তাই যাই । গুরুদেবের সমস্ত কথার অন্তর্নিহিত অর্থ থাকে। মন দিয়ে শুনে বোঝবার চেষ্টা করি। উনি সবসময় মজা করে অনেক কথা বলেন কিন্তু ভালো করে শুনলে বোঝা যায় এর অনেক গভীর অর্থ আছে।

আজ একজন শিষ্য তার ব্যক্তিগত অভিজ্ঞতার কথা বলছিলেন , একদিন উনি ধ্যান করছিলেন সাপ ঢুকেছিল ঘরে। হাতের উপর দিয়ে চলে গেছে। উনি খুবই ভয় পেয়েছিলেন, কিন্তু সাপ কিছুই করেনি। গুরুদেব প্রথমে মজা করলেন ওনার সাথে, বললেন , "এইসব লিখে আরেকটু অলৌকিকতা জুড়ে দাও। দেখবে বই দারুন বিক্রি হবে"। সবাই হাসছিল শুনে । পরে বললেন, মানুষ যখন ঈশ্বরকে ধরে থাকে তখন তার মধ্যে হিংসা বা অনিষ্ঠকারী কোন ভাব কাজ করে না। প্রাণীদের অনুভব শক্তি খুব বেশি, তাই তারা অনুভব করে যে এ আমার কোন ক্ষতি করবে না ,সেই কারণে সাপ বা অন্য কোন যন্তু সাধককে আক্রমণ করে না। গুরুদেব আজ আরো একটা কথা বললেন দীক্ষা সময়ে গুরু তার শক্তি দিয়ে শিষ্যের আধার অনুযায়ী তাকে শক্তি দেন। কিন্তু শিষ্য যদি সেই সাধনার চর্চা না করে তবে তা ক্রমশ ক্ষীণ হয়ে নিঃশেষ হয়ে যায়।

গুরুদেবের কথাটা ভাবতে ভাবতে মনে হল সবটাই বিজ্ঞান। যেমন স্থিরচুম্বকের সান্নিধ্যে এলে লোহা magnetized হয় কিন্তু সেই বলয় থেকে সরিয়ে নিলেই তার ম্যাগনেটিজম চলে যায়। কিন্তু ক্রমাগত যদি তার মধ্যে electricity flow করানো হয় সময়ের সাথে সাথে সেই লোহা স্থির চুম্বকে পরিণত হয়। তাই হে মন কএমন সাধনার চেষ্টা করো যাতে স্থিরচুম্বক হতে পারো। পরিশেষে এটুকুই বলার যে সামান্য লেখা দিয়ে গুরুদেবের কথা বোঝাতে পারি তেমন সাধ্য এই শিষ্যার নেই। তাঁর কৃপা প্রতিমুহূর্তে অনুভব হয়। শিষ্যের হৃদয় তার স্থান । কলমের সাধ্য কি তার বর্ণনা করে !

গুরুদেবের চরণে প্রণাম জানিয়ে এই লেখার প্রথম পর্ব শেষ করলাম।

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

শূন্য থেকে ...অনন্তের পথে

- অমিত চ্যাটার্জি

জুলাই ২০২৫-এর 'অন্বেষণ'-এ গুরুদেব-এর কিছু কথা পড়ে চমৎকৃত হই। গুরুদেব লিখছেন:

"অতিচেতন অবস্থায় কর্মী অনন্ত শক্তিতে পরিবর্তিত হয়, ফলে যোগের এক চরম অবস্থায় অবস্থিতি হয়।..... সব ব্যক্তিগত চাহিদাই শূন্যে লীন হয়ে যায়। এই অনন্ত রূপ অবস্থায় বিষয় ও বিষয়ী এক হয়ে যায়। তখন সাধক নিজেই গুরু নিজেই শিষ্য, নিজেই স্রষ্টা ও সৃষ্ট; তখন সব ক্লেশই নাশ হয়ে যায়। **(Vol 2, Issue 6)**"

খুব স্থুলভাবে বিচার করলে বলা যায়, শূন্য অর্থাৎ অঙ্কের শূন্য, যার চিহ্ন বৃত্তের মতো। আর অনন্ত অর্থাৎ অসীম বা ইনফিনিটি, যার চিহ্ন ইংরেজির '8' অক্ষরের মতো। শূন্য থেকে অনন্ত কীভাবে হয়ে যায়, এর সাথে ক্রিয়াযোগের সম্পর্ক কী? এর সত্যিই কি কোনো বৈজ্ঞানিক ভিত্তি আছে? এই সকল প্রশ্ন যখন মনকে তীব্র নাড়া দিচ্ছে, বিচলিত হয়ে পড়েছে সমগ্র সত্তা, তখন নিরুপায় হয়েই লাহিড়ী বাবার শরণ নিই। বাহ্যিক ভাবে যতই নিজেকে বিজ্ঞানের ছাত্র হিসেবে প্রচার করি—অন্তরে তো জানি আমার বিদ্যার দৌড় কতটা।

তাই নিরুপায় হয়ে সর্বপ্রথম সেটাই করলাম, যা কোনো কিছু খুঁজতে হলে আজকাল প্রায় সবাই করে থাকে—গুগল সার্চ। গীতার কোথায় কোথায় অনন্তের উল্লেখ আছে, সেটাই ছিল মূল প্রশ্ন। প্রথম যে শ্লোকটি খুঁজে পেলাম, সেটি ভীষণই আকর্ষণীয়। সেখানে ভগবান কৃষ্ণ অর্জুনকে বলছেন [১]:

अनन्तश्चास्मिनागानां वरुणीयादसामहम् |
पितृणामर्यमाचास्मि यम: संयमतामहम् || १०/२९||

অর্থ: সাপদের মধ্যে আমি অনন্ত; জলজ প্রাণীদের মধ্যে আমি বরুণ। প্রয়াত পূর্বপুরুষদের মধ্যে আমি অর্যম; আইন প্রণেতাদের মধ্যে আমি মৃত্যুর অধিপতি যমরাজ।

এই শ্লোক থেকে বোঝা যায় যে অনন্ত ঈশ্বরেরই একটি রূপ। কিন্তু এই “অনন্ত” শব্দটি কি শুধুই একটি নাম? নাকি এর অর্থ কেবল এতটুকুই—যার পরিমাপ করা যায় না? এমনও তো হতে পারে যে এটি নিছকই একটি দার্শনিক উপদেশ, যার কোনো কার্যকর বা ক্রিয়াত্মক দৃষ্টিভঙ্গি নেই।

এই দ্বন্দ্বটাই তখন মনে ঘুরপাক খেতে শুরু করল। ঠিক সেই সময়েই মনে পড়ল—আমি তো অনন্তদেবের মূর্তি আগে দেখেছি। সেই মূর্তিতে উপরের অংশে রয়েছে সপ্তমুখী সর্প, আর নিচের অংশে স্পষ্টভাবে একটি ইনফিনিটি চিহ্ন। দক্ষিণ ভারতের অধিকাংশ মন্দিরেই এই রূপে অনন্তদেবের মূর্তি প্রতিষ্ঠিত রয়েছে। অর্থাৎ, ইনফিনিটি সিম্বল এবং “অনন্ত” শব্দ—দুটো যে গভীরভাবে পরস্পরের সঙ্গে যুক্ত, তার একটি দৃশ্যমান ও সাংস্কৃতিক প্রমাণ আমাদের সামনেই আছে।

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

এতদূর পর্যন্ত তো বোঝা গেল, কিন্তু গীতায় “শূন্য”-এর উল্লেখ কোথায় আছে? যদি একটি বিন্দু আরেকটি বিন্দুকে কেন্দ্র করে বৃত্তাকার পথে ঘুরতে থাকে, তাহলে সেই গতি থেকে শূন্যের চিহ্ন (০) তৈরি হয়। যাঁরা গুরুদেব বা দুবেজির বই পড়েছেন, তাঁরা জানেন—ক্রিয়ার একটি বিশেষ অবস্থায় চক্রাকার প্রদক্ষিণ ঘটে। এই অবস্থারই বর্ণনা গীতার এই শ্লোকটিতে পাওয়া যায়, যেখানে কথক হলেন অর্জুন—অর্থাৎ শিষ্য:

নম: পুরস্তাদথ পৃষ্ঠতস্তে
নমোऽস্তু তেসর্বত এবসর্ব || ১১/৪০||

অর্থ: আপনাকে সামনে এবং পেছন থেকে নমস্কার। প্রকৃতপক্ষে, সর্বত্রতোমাকে নমস্কার হোক, তুমি সর্বত্র ব্যাপ্ত, তাইতুমিই সব। অর্থাৎ, যদি কোনো ব্যক্তি কেন্দ্রে দাঁড়িয়ে চারদিকের দিকে প্রণাম করে, তবে পরিধির সমস্ত বিন্দুকে যুক্ত করলে একটি বৃত্তই তৈরি হয়। এর পূর্ববর্তী শ্লোকে দুটি গুরুত্বপূর্ণ তথ্য রয়েছে:

ত্বমাদিদেব: পুরুষ: পুরাণস্-
ত্বমস্য বিশ্বস্যপরং নিধানম্ |
বেত্তাসি বেদ্যংচ পরংচ ধাম
ত্বয়া ততংবিশ্বমনন্তরুপ || ১১/৩৮||

অর্থ: তুমি আদিদেব, চিরন্তন পুরুষ, তুমিই এই সমগ্র বিশ্বের পরম আশ্রয় ও আধার। তুমিই জ্ঞানী, তুমিই জানার যোগ্য পরম সত্য, আর তুমিই পরম ধাম। হে অনন্তরূপ! এই সমগ্র বিশ্ব তোমার দ্বারাই পরিব্যাপ্ত।

নমোনমস্তেऽস্তু সহস্রকৃত্ব:
পুনশ্চ ভূয়োऽপিনমো নমস্তে || ১১/৩৯||

অর্থ: তোমাকে সহস্রবার প্রণাম, পুনরায় এবং আবারও তোমাকে প্রণাম। অর্থাৎ, অর্জুন ভগবানের অনন্ত রূপকে প্রণাম করছেন। যদি শূন্য রূপে প্রণাম করা একটি ক্রিয়াত্মক প্রক্রিয়া হয়, তবে অনন্ত রূপে প্রণাম করাও অবশ্যই একটি ক্রিয়াত্মক প্রক্রিয়াই।

ক্রিয়াবান মাত্রই অবগত যে নাগ বা সর্প হলো কুণ্ডলিনী শক্তির প্রতীক। এই সর্প যখন অনন্ত রূপ ধারণ করে, সেই অবস্থাকেই লাহিড়ী বাবা ‘যথার্থ ব্রাহ্মণ’ বলে উল্লেখ করেছেন। এ পর্যন্ত গীতার আলোকে শূন্য ও অনন্তের ক্রিয়াত্মক ব্যাখ্যা পাওয়া যায়। এই ক্রিয়াত্মক ব্যাখ্যাই প্রকৃতি ও বিজ্ঞানের আলোতেও যথার্থভাবে প্রমাণিত হওয়া উচিত—এই প্রত্যাশাই এখান থেকে স্বাভাবিকভাবে উঠে আসে।

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

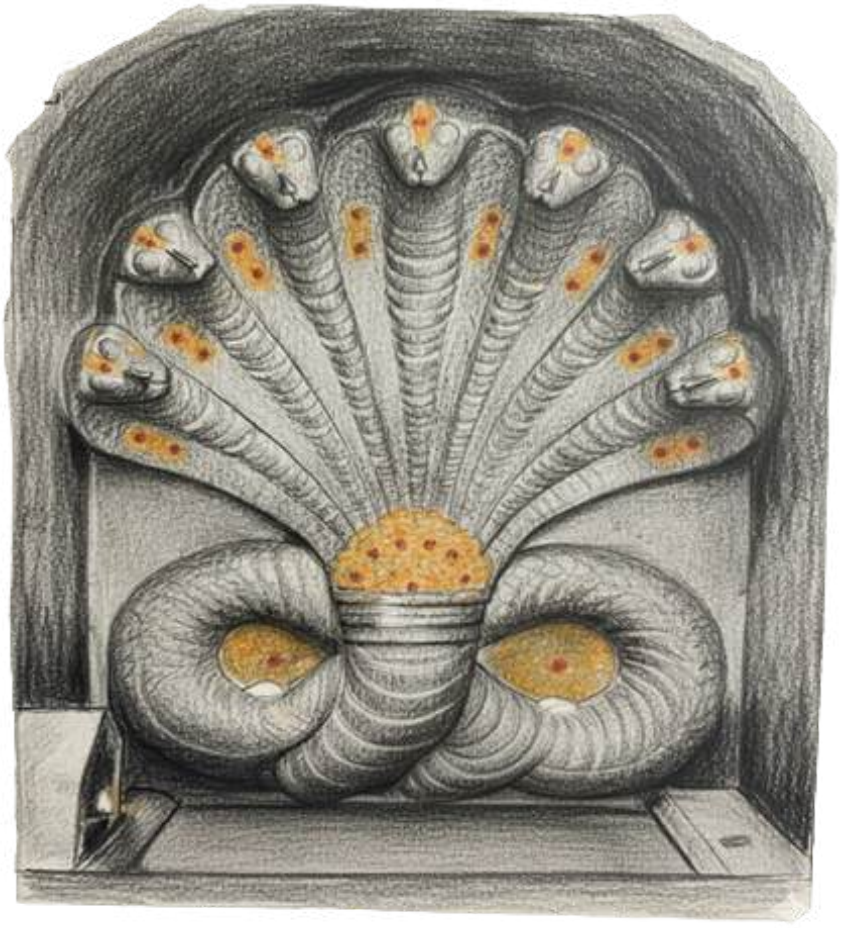

চিত্র ১: অনন্তদেব

হনুমান সম্পর্কে আমরা সকলেই অবগত। রাম—অর্থাৎ কূটস্থ ব্রহ্ম—তাঁর সর্বশ্রেষ্ঠ ভক্ত হিসেবে হনুমান জগতে পরিচিত। যখন হনুমান শিক্ষার বয়সে পৌঁছালেন, তখন তিনি সূর্যদেবের কাছে প্রার্থনা করলেন—"ভগবান, আমাকে শিক্ষা দিন।" সূর্যদেব প্রথমে দ্বিধায় পড়লেন, কারণ তাঁর পক্ষে থেমে থেকে শিক্ষা দেওয়া সম্ভব ছিল না; তাঁর পথ ছিল নিরবচ্ছিন্ন, অবিরাম গতি। হনুমান তা বুঝতে পেরে বললেন—"আপনি চললে আমিও চলব। আমি থামব না। আপনি যেখানে থাকবেন, আমিও সেখানেই থাকব।"

এই কথাটিকে আক্ষরিকভাবে ধরলে মনে হয়—হনুমান সূর্যের সঙ্গে উড়ে উড়ে শিক্ষা গ্রহণ করেছিলেন। আধুনিক সিনেমা বা সিরিয়ালেও ঘটনাটি এভাবেই দেখানো হয়। কিন্তু এই ঘটনার মধ্যে কি সত্যিই কোনো গভীর ক্রিয়া বা তত্ত্ব লুকিয়ে নেই—যা সহজ বুদ্ধিতে ধরা পড়ে না? যেমন, নারায়ণকে প্রদক্ষিণ করার অর্থ যদি কোনো বাহ্যিক স্থানকে ঘিরে ঘোরা না হয়ে আমাদের শরীরেরই একটি বিশেষ ক্ষেত্রকে কেন্দ্র করে প্রদক্ষিণ করা হয়, তেমনই সূর্যের গতিপথ অনুসরণ করার অর্থও এক ভিন্ন ধরনের ক্রিয়াপদ্ধতি হতেই পারে।

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

সেই গতিপথের রূপ বা আকৃতি কেমন? যদি কেউ অত্যন্ত ধৈর্য সহকারে প্রতিদিন একই সময়ে এক বছর ধরে সূর্যকে পর্যবেক্ষণ করে, তবে সে বুঝতে পারবে—সূর্যের অবস্থান প্রতিদিন একই জায়গায় থাকে না। বরং প্রতিদিন সামান্য সামান্য করে সরে যায় এবং এক বছরের শেষে আকাশে একটি ইনফিনিটি বা অসীম আকৃতি তৈরি করে। আকাশে গঠিত এই অসীম চিহ্নকেই বলা হয় সোলার অ্যানালেমা (Solar Analemma) [২]।

সূর্যের অ্যানালেমা তৈরি হয় মূলত দুই কারণে। প্রথমত, পৃথিবীর ঘূর্ণন অক্ষ কাত হওয়া। পৃথিবীর অক্ষ সোজা না হয়ে ২৩.৫ ডিগ্রি হেলে আছে, তাই সারা বছর সূর্য কখনো আকাশে উঁচু দেখা যায়, আবার কখনো নিচে। এই কারণে অ্যানালেমার উপর–নিচে লুপ তৈরি হয়। দ্বিতীয়ত, পৃথিবী সূর্যকে প্রদক্ষিণ করার সময় একদম গোল পথে ঘোরে না, পথটা একটু লম্বাটে বা উপবৃত্তাকার। তাই পৃথিবীর গতি কখনো একটু বেশি, কখনো একটু কম হয়। এ কারণে সূর্যকে প্রতিদিন একই সময়ে দেখলে মনে হয় সে একটু পূর্বে বা পশ্চিমে সরে গেছে। এই দিক বদলানো অংশই অ্যানালেমার ডান–বাম বক্রতা তৈরি করে। এই দুই কারণ মিলে এক বছরের শেষে সূর্যের অবস্থানগুলো একত্র করলে অসীমের মতো আকৃতি দেখা যায়, যেটাই হলো অ্যানালেমা।

চিত্র ২: আকাশে সূর্যের অবস্থান থেকে গঠিত অসীম (∞) আকৃতির রেখা (Solar Annalema).

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

তাহলে বোঝা গেল—এক বছর ধরে সূর্যের গতিপথকে নিয়মিত ও সচেতনভাবে পর্যবেক্ষণ করলে "অনন্ত"-কে উপলব্ধি করা যায়। হনুমান সূর্যের সঙ্গে আক্ষরিক অর্থে উড়ে উড়ে শিক্ষা নেননি। বরং তিনি সূর্যের গতি, নিয়ম, ছন্দ ও পুনরাবৃত্তির মধ্য দিয়ে যে গভীর ক্রিয়ামূলক জ্ঞান নিহিত আছে, সেটিকেই আত্মস্থ করেছিলেন।

এটা তো গেল প্রকৃতিতে অনন্তের ঘূর্ণন। কিন্তু প্রশ্ন হলো—আধুনিক বিজ্ঞানে কি এমন কিছু আছে? উত্তর হলো: হ্যাঁ, আছে—এবং শুধু আছে তাই নয়, অনন্তের এই ঘূর্ণন আধুনিক বিজ্ঞানের বহু মৌলিক স্তম্ভের সঙ্গেই জড়িত।

কয়েক বছর আগে আমি অমিতাভ দত্তদার "মানসপুত্র" নামক প্রবন্ধটি পড়ে জানতে পেরেছিলাম —বায়োকেমিস্ট্রির এক বিজ্ঞানী দুবেজি মহারাজকে জেনেটিক্সের একটি বই খুলে ক্রিয়ার পদ্ধতিগুলি দেখিয়েছিলেন। এই ঘটনাটি আমার মনে গভীরভাবে দাগ কেটেছিল, কারণ এখানে আধুনিক জীববিজ্ঞান ও আধ্যাত্মিক ক্রিয়ার মধ্যে এক অদ্ভুত সেতুবন্ধন দেখা যায়। তাই বিষয়টিকে যদি বৈজ্ঞানিক দৃষ্টিকোণ থেকে ধরতে হয়, তবে জেনেটিক্স দিয়েই শুরু করাই সবচেয়ে স্বাভাবিক ও যুক্তিসঙ্গত হবে।

আমরা সাধারণত যে DNA দেখি তা সোজা লম্বা (linear)। কিন্তু ব্যাকটেরিয়া, মাইটোকন্ড্রিয়া, ক্লোরোপ্লাস্ট ইত্যাদির DNA বৃত্তাকার [৩]। সোজা DNA-এর দুই প্রান্ত স্থির নয়—জলে ভাসমান ফিতার মতো নড়ে। এক সময় দুটি প্রান্ত একই স্থানে চলে আসতে পারে। DNA লিগেজ নামক enzyme দু'টি প্রান্তকে রসদ দিয়ে জোড়া লাগিয়ে দেয়। ফলে DNA আর সোজা থাকে না, পরিপূর্ণ একটি বৃত্ত হয়ে যায়। বৃত্তাকার DNA তৈরি হলে একটি বড় নিয়ম তৈরি হয়: বৃত্তাকার DNA না কাটা পর্যন্ত Lk (মোট জড়ানোর সংখ্যা) বদলায় না।

$$\mathbf{Lk = Tw + Wr}$$

এটি বৃত্তাকার (circular) DNA-র সবচেয়ে গুরুত্বপূর্ণ টপোলজিক্যাল নিয়ম। এই স্থির Linking Number-ই পরবর্তী রূপান্তরগুলোকে নিয়ন্ত্রণ করে। এখানে তিনটি শব্দ আছে—Linking, Twist, Writhe।

Lk =দুইটি DNA strand মোট কতবার একে অপরকে জড়িয়ে আছে তার সংখ্যা।

বৃত্তাকার DNA কাটাছেঁড়া না করলে Lk কখনো বদলায় না। এটি ঠিক পুরো সিস্টেমের "ফিক্সড" লকিং বা জড়ানোর পরিমাণ।

Twist (Tw)= এটি হলো দুইটি strand নিজে নিজে কতবার পাক খেয়েছে। অর্থাৎ DNA-এর হেলিক্সের মধ্যে আসল ঘূর্ণন।

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

Writhe (Wr)= এটি হলো DNA কতটা বেঁকেছে, লুপ করেছে বা ক্রস করেছে। ৩-ডিমেনশনে যে লুপ বা সুপারকয়েল তৈরি হয়- সেগুলো Writhe।

এখন বৃত্তটি স্থির, আর তার Linking Number = Lk।

কিন্তু DNA-এর ভেতরের পাক (Twist) পরিবর্তন হতে পারে—

- DNA একটু বেশি মোচড় খেলে
- বা একটু কম পাকালে
- বা টপোলজিক্যাল স্ট্রেস তৈরি হলে

এই পরিবর্তনগুলো Writhe নামক বড়-স্কেলের বক্রতা তৈরি করে। DNA বৃত্তের এক অংশ অন্য অংশের উপর উঠে আসে এবং একটি "X"-এর মতো প্রথম ক্রসিং তৈরি হয়।

এটি হচ্ছে $Wr \neq 0$ অবস্থার সূচনা। এটাই সবচেয়ে গুরুত্বপূর্ণ ধাপ। এখন DNA আর O নয়— এটি "ক্রসিং-সহ" একটি বিকৃত লুপ।

প্রকৃতি সবসময় কম-শক্তির (lowest energy) অবস্থা বেছে নেয়। যখন: Tw কমে গেছে/ বেড়েছে, Wr বাড়ছে, DNA চাপ সামলাতে চাইছে; তখন বৃত্তের সবচেয়ে স্থিতিশীল রূপ হয়— Figure 8 or Infinity Shape (Figure C). ফলে সিস্টেমের শক্তি কমে যায় → এটাই stable shape. তাই বৃত্ত → প্রথম ক্রসিং → Figure-8

এটি জ্যামিতিকভাবে O-এর চেয়ে একধাপ উচ্চতর Topology।

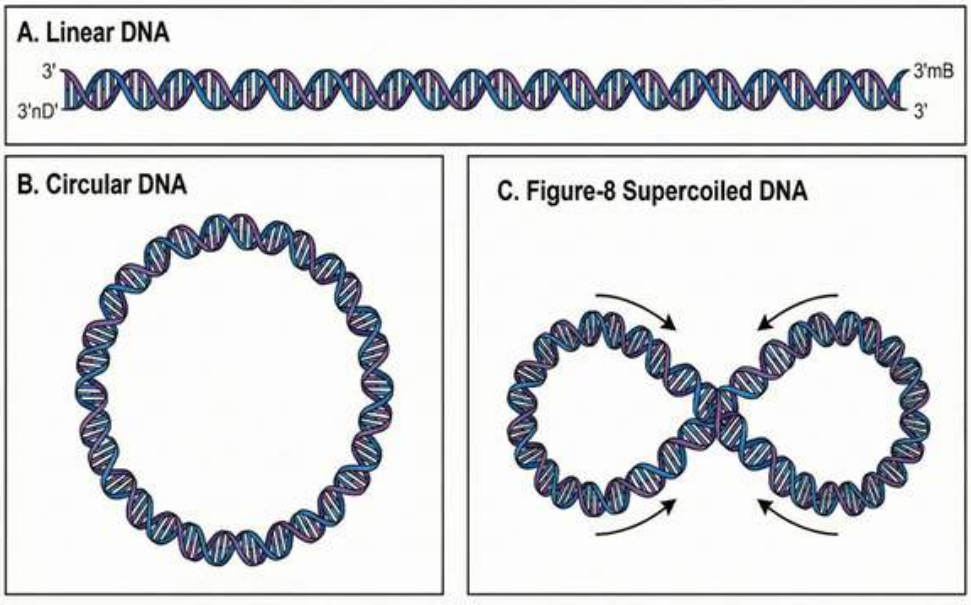

চিত্র ৩: ডিএনএ-র কাঠামোগত রূপান্তর—(A) লিনিয়ার ডিএনএ, (B) বৃত্তাকার ডিএনএ এবং (C) টপোলজিক্যাল চাপের ফলে গঠিত ফিগার-৮ (∞) আকৃতির সুপারকয়েলড ডিএনএ

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

লিনিয়ার DNA একদম সোজা সুতোর মতো, যার শুধু সামনে-পিছনে বাঁকানো বা মোড় নেওয়ার কিছু সীমিত freedom থাকে। প্রান্ত দু'টি আলাদা থাকায় এর degree of freedom তুলনামূলকভাবে কম। কিন্তু যখন এই সোজা সুতোটিকে বেঁকিয়ে প্রান্তগুলো জুড়ে বৃত্ত বানানো হয়, তখন DNA এক ধাপ উচ্চতর টপোলজিক্যাল স্তরে যায়—এখন আর শুরু বা শেষ নেই, পুরো লুপটি একক সিস্টেম হিসেবে আচরণ করে। এ অবস্থায় Linking Number স্থির হওয়ায় Twist ও Writhe-এর মধ্যে পারস্পরিক সমন্বয় বাধ্যতামূলক হয়ে পড়ে, ফলে বৃত্তের নিজস্ব degree of freedom আরও বেড়ে যায় (ঘুরতে পারে, সুপারকয়েল হতে পারে, নিজে নিজে ফোল্ড হতে পারে)। এই অতিরিক্ত স্বাধীনতাই বৃত্তকে ধীরে ধীরে আরও জটিল টপোলজিক্যাল আকৃতির দিকে চালিত করে। তাই যখন লুপে অতিরিক্ত মোচড় জমে, তখন বৃত্ত নিজের ওপর ভেঙে গিয়ে একটি ক্রসিং-সহ Figure-8 আকৃতি তৈরি করতে পারে। এই ০ থেকে 8-এ রূপান্তর আসলে degree of freedom-এর বৃদ্ধি এবং টপোলজিক্যাল চাপের স্বাভাবিক বিবর্তন (Evolution)—যেখানে DNA-র আচরণ সোজা বা বৃত্তের তুলনায় আরও সমৃদ্ধ এবং বহুমাত্রিক হয়ে ওঠে।

DNA–র জ্যামিতি আমাদের দেখায়—একটি সোজা, লম্বা স্ট্রাকচার যখন বৃত্তে (O) পরিণত হয়, তখন সেটি নিজের ভেতরের টান, ঘূর্ণন ও আন্তঃক্রিয়ার কারণে সহজেই দ্বি-লুপ বা figure-8 (∞)–এ রূপ নিতে পারে। এটি শুধু জৈববিজ্ঞানের ঘটনা নয়—পদার্থবিজ্ঞানে আমরা একই রূপান্তরের স্পষ্ট উদাহরণ দেখি, যেখানে সোজা তার, বৃত্তাকার লুপ এবং electromagnetic ক্ষেত্র মিলেই ঠিক একই পথ অনুসরণ করে।

যখন সোজা কোন তারের মধ্যে বিদ্যুৎ প্রবাহিত হয়, তখন তার চারদিকে স্বাভাবিকভাবেই বৃত্তাকারে চৌম্বক ক্ষেত্র (magnetic field lines) তৈরি হয়। এটি রাইট-হ্যান্ড রুল অনুযায়ী সবসময় তারকে ঘিরে একই দিকের ঘূর্ণন তৈরি করে। এখানে তারটি লিনিয়ার হওয়ায় চৌম্বক ক্ষেত্র কেবল তারের চারদিকে ঘোরে, কিন্তু সিস্টেমের আলাদা কোনও জটিল আকৃতি তৈরি হয় না। অর্থাৎ লিনিয়ার তার → বৃত্তাকার চৌম্বক ক্ষেত্র—এটা electromagnetism-এর প্রথম প্রমাণ যে বিদ্যুৎ প্রবাহ সরাসরি জ্যামিতিকে পরিবর্তন ঘটাতে পারে [8]।

কিন্তু যখন একই বিদ্যুৎ একটি বৃত্তাকার তারের মধ্যে প্রবাহিত হতে শুরু করে, তখন পরিস্থিতি হঠাৎ পরিবর্তিত হয়। বৃত্তাকার তারে প্রবাহিত কারেন্ট এমন একটি চৌম্বক ক্ষেত্র তৈরি করে যা আর শুধু তারকে ঘিরে থাকে না—এটি লুপের ভেতর এবং বাইরের অঞ্চলে দুটি আলাদা ঘূর্ণনকারী magnetic sub-loop তৈরি করে। লুপের উপরিভাগে ক্ষেত্ররেখা একদিকে ঘোরে, আর নিচের ভাগে উল্টো দিকে। এই দুই বিপরীতমুখী ঘূর্ণনকারী magnetic domain ক্রমশ একে অপরকে 'পুশ' করে এবং ক্ষেত্ররেখাগুলিকে সঙ্কুচিত হতে বাধ্য করে। যদি লুপটি খুব ছোট করা হয় বা দুই sub-loop খুব কাছাকাছি চলে আসে, তাহলে ক্ষেত্ররেখার বিন্যাস এমন একটি টপোলজিতে বিকশিত হয় যেখানে দুটি ঘূর্ণন একক ফ্লাক্স-ম্যানিফোল্ডের দুই লোব তৈরি করে—দেখতে অনেকটা একটি শুয়ে থাকা ∞ (infinity symbol)–এর মতো।

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

এভাবে বিদ্যুতের প্রবাহ জ্যামিতিকে পরিবর্তন করে: লিনিয়ার → বৃত্ত → দ্বি-লুপ ∞। এটাই পুরো ঘটনাটির পদার্থবৈজ্ঞানিক ব্যাখ্যা।

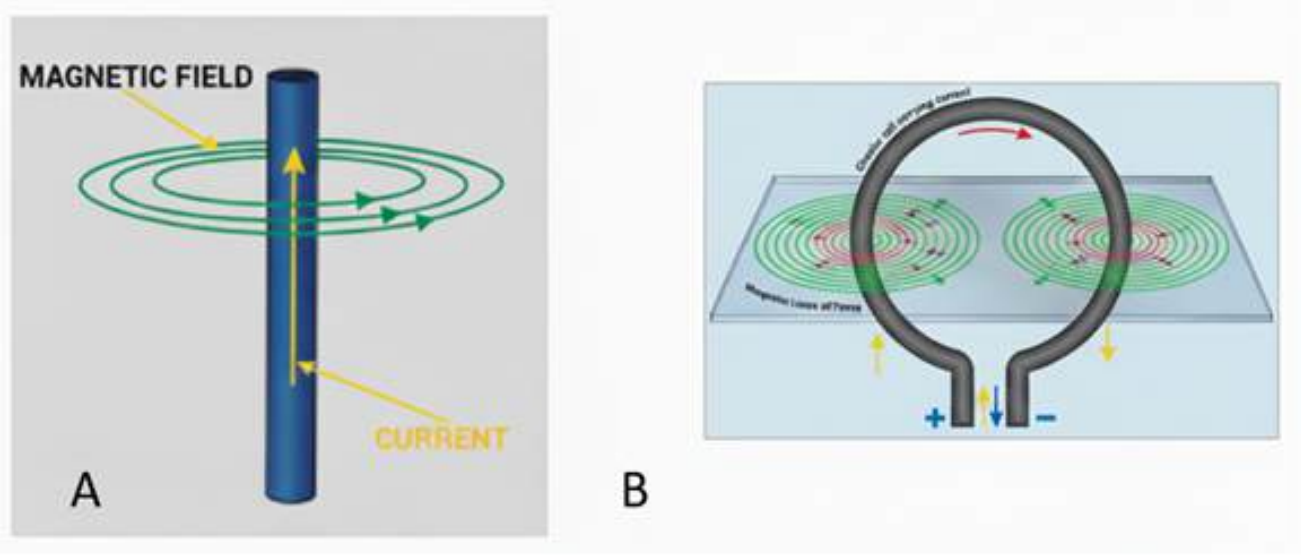

চিত্র ৪: তড়িৎপ্রবাহ ও চৌম্বক ক্ষেত্রের জ্যামিতিক বিবর্তন—(A) সোজা তারে প্রবাহিত বিদ্যুৎ থেকে বৃত্তাকার চৌম্বক ক্ষেত্রের সৃষ্টি, (B) বৃত্তাকার তারে বিদ্যুৎ প্রবাহের ফলে দ্বিমুখী ঘূর্ণনকারী চৌম্বক উপ-লুপের গঠন.

স্ট্রিং থিওরির গভীরেও এই জ্যামিতিক রূপান্তরের নীতিটি সক্রিয়: জগতের মৌলিক উপাদান হিসেবে যে বন্ধ বৃত্তাকার স্ট্রিংগুলি (O) কল্পনা করা হয়, তারা স্থিতিশীল নয়, বরং তারা গতিশীল এবং তাদের মধ্যে কম্পন বা মিথস্ক্রিয়া (Interaction) ঘটে। এই স্ট্রিংগুলি যখন উচ্চমাত্রার জ্যামিতিক চাপে পড়ে বা নিজেদের মধ্যে ক্রিয়া-প্রতিক্রিয়া করে, তখন তাদের সরল লুপের টপোলজিটি ভেঙে যায়।

দুটি লুপের মিথস্ক্রিয়া বা একটি একক লুপের স্ব-সংযোগের (Self-Intersection) ফলে ক্ষণিকের জন্য যে জটিল জ্যামিতি তৈরি হতে পারে, তার মধ্যে একটি হলো Figure-Eight (8) আকৃতি। এই O থেকে 8-এর দিকে যাত্রা কেবল স্ট্রিংগুলির কম্পনের ফলে সৃষ্ট কণা বা বলের মিথস্ক্রিয়াকেই নির্দেশ করে না, বরং এটি দেখায় যে কীভাবে একটি এক-মাত্রিক সরল কাঠামো তার গতিশীলতা এবং চাপ বজায় রাখার প্রয়োজনে আরও জটিল এবং বহু-মাত্রিক (D-branes বা উচ্চতর টপোলজি) কাঠামোর দিকে বিবর্তিত হয়, যা আমাদের মহাবিশ্বের অসীম জটিলতা ও ভিন্ন ভিন্ন মাত্রার অস্তিত্বকে ব্যাখ্যা করার চেষ্টা করে।

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

অতএব, শূন্য থেকে অনন্তের যাত্রা কোনো কাব্যিক অলংকারমাত্র নয়, আবার নিছক দার্শনিক কল্পনাও নয়। এটি একদিকে যেমন অন্তর্মুখী ক্রিয়ামূলক সাধনার অভিজ্ঞতা, অন্যদিকে তেমনই প্রকৃতি ও বিজ্ঞানের অন্তর্নিহিত জ্যামিতিক ও টপোলজিক্যাল সত্যের প্রতিফলন। গীতা, গুরুবাণী, পুরাণকথা ও আধুনিক বিজ্ঞান—সবাই যেন ভিন্ন ভাষায় একই মৌলিক সত্যের দিকেই ইঙ্গিত করে: কেন্দ্রের শূন্যতায় স্থিত হয়ে নিরবচ্ছিন্ন ক্রিয়ার মধ্য দিয়ে চললে সত্তা নিজেই অনন্তে রূপান্তরিত হয়। তখন আর আলাদা করে বিশ্বাস বা অবিশ্বাসের প্রশ্ন থাকে না—থাকে কেবল উপলব্ধি। শূন্য তখন আর অভাব নয়, সম্ভাবনা; আর অনন্ত তখন আর দূরের কোনো ধারণা নয়, বর্তমান মুহূর্তে প্রত্যক্ষ অভিজ্ঞতা।

কৃতজ্ঞতাস্বীকার:

সুজয় বিশ্বাস, যার ক্রমাগত অনুপ্রেরণায় আমি ক্রিয়ার বৈজ্ঞানিক দিকটি অনুসন্ধান করতে উৎসাহ পেয়েছিলাম।

তথ্যসূত্র:

1.https://www.holy-bhagavad-gita.org/
2.https://solar-center.stanford.edu/art/analemma.html
3.https://www.youtube.com/watch?v=DxREU4puGyc&t=244s
4.Stratton, Julius Adams. Electromagnetic theory. John Wiley & Sons, 2007.

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

ভালোবাসার সন্ধানে
- সুজয় বিশ্বাস
RYKYAI.org

আমরা অনেকেই প্রায়শই গুরুদেবের কাছে এসে শুনে থাকি, অনেকেই গুরুদেবকে বলেন যে- আপনাকে শুধু দেখতে এসেছি, আমার কিছু জিজ্ঞাসা নেই। আবার অনেকে বলে- বাবা আপনাকে ভালো লাগে তাই আসেছি, আবার অনেকেই তাদের নানান ধরনের প্রশ্ন নিয়েও আসে। এখন প্রশ্ন হচ্ছে কি এই 'ভালোলাগা' বা 'ভালোবাসা'? তার কত ধরণেরই বা প্রকারভেদ হয়ে থাকে? এক ধরনের ভালোবাসা হয় গুরুর প্রতি শিষ্যের ভালোবাসা, আবার একই সঙ্গে শিষ্যের প্রতি গুরুর যে ভালোবাসা। যার মধ্যে কোন স্বার্থ বা চুক্তি থাকে না। এখানে এই ভালোবাসার মধ্যে থাকে শুধুমাত্র আদান-প্রদান।

উপরে বলা কথাগুলো সঠিক ভাবে বোঝবার জন্য তৈত্তিরীয়োপনিষদ্ থেকে নেওয়া কিছু গুরু-শিষ্যের কথোপকথন এখানে উল্লেখ করা হলো। ঋষি ভৃগু একজন প্রসিদ্ধ ঋষি ছিলেন। তিনি বরুণদেবের পুত্র। তাঁর মনে পরমাত্মাকে জানার এবং তাঁকে লাভ করার উৎকট অভিলাষ হয়েছিল। তখন তিনি নিজ পিতা বরুণদেবের নিকট উপস্থিত হন। নিজ পিতৃসন্নিধানে উপস্থিত হয়ে ঋষি ভৃগু প্রার্থনা করলেন- 'ভগবন্! আমি ব্রহ্মকে জানতে ইচ্ছা করি। অতএব, কৃপাপূর্বক আমাকে ব্রহ্মতত্ত্ব বোঝান।' তখন বরুণদেব ঋষি ভৃগুকে বললেন 'তাত! অন্ন, প্রাণ, নেত্র, শ্রোত্র, মন এবং বাণী-এ সমস্ত ব্রহ্মোপলব্ধির দ্বার। এই সবে ব্রহ্মসত্তা স্ফুরিত হচ্ছে।

মহর্ষি ভৃগু পিতার উপদেশানুসারে নিশ্চয় করলেন যে, অন্নই ব্রহ্ম; এইভাবে নিশ্চয় করে তিনি পুনরায় পিতা বরুণদেবের নিকট উপস্থিত হলেন এবং নিজের অধীত জ্ঞান অনুসারে সমস্ত কথা বললেন। পিতৃদেব কিন্তু নিরুত্তর ছিলেন। তিনি ভাবলেন-'এ তো এখনো ব্রহ্মের স্থূল রূপকেই বুঝেছে, যথার্থ রূপ পর্যন্ত এর বুদ্ধি পৌঁছায়নি। অতএব, পুনঃ তপস্যা করে এর আরও বিচারের প্রয়োজন। বরুণদেব বললেন-'তুমি তপ দ্বারা ব্রহ্মতত্ত্ব হৃদয়ঙ্গম করার চেষ্টা করো।'

মহর্ষি ভৃগু পিতার উপদেশানুসারে তপ দ্বারা নিশ্চয় করলেন যে, প্রাণই ব্রহ্ম। সমস্ত প্রাণী প্রাণ দ্বারা উৎপন্ন অর্থাৎ এক জীবিত প্রাণী থেকে তার ন্যায় অন্য প্রাণীকে উৎপন্ন হতে প্রত্যক্ষ দেখা যায়। অতএব, সমস্ত প্রাণী প্রাণ দ্বারাই জীবিত। একথা নিশ্চয় করে ঋষিবর পুনরায় নিজ পিতৃদেবের সন্নিকটে উপস্থিত হলেন এবং পূর্বের ন্যায় নিজ নিশ্চয়ানুসারে অনুভূত তত্ত্ব পিতৃদেবকে জ্ঞাপন করলেন। পুনরায় পিতা নিরুত্তর। বরুণদেব তখন তাঁকে পূর্ববৎ বললেন- 'তুমি তপ দ্বারা ব্রহ্মকে জানার প্রচেষ্টা করো; তপই ব্রহ্ম, অর্থাৎ ব্রহ্মতত্ত্ব জানার একমাত্র প্রধান সাধন।'

পিতার উপদেশানুসারে ঋষি ভৃগু নিশ্চয় করলেন মনই ব্রহ্ম। মন থেকেই সকল প্রাণীর উৎপত্তি। একথা নিশ্চয় করে তিনি পুনরায় পূর্ববৎ পিতৃসকাশে পৌঁছে নিজের অনুভব উপস্থাপন করেন। এবারও পিতা নিরুত্তর। তখন বরুণদেব পুনরায় ওই উত্তরই দিলেন-'তুমি তপ দ্বারা ব্রহ্মতত্ত্ব উপলব্ধি করো। তপই ব্রহ্ম।

ঋষি ভৃগু পিতার উপদেশানুসারে একথা নিশ্চয় করলেন যে, বিজ্ঞানস্বরূপ চেতন জীবাত্মাই হলেন ব্রহ্ম। এই সমস্ত প্রাণী জীবাত্মা থেকেই উৎপন্ন। বরুণদেব ভাবলেন 'এবার তো ভৃগু অনেকটা এগিয়েছে।

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

ভৃগুর বিচার স্থূল থেকে সূক্ষ্ম হয়েছে। বরুণদেব ভাবলেন, অতএব উত্তর দেওয়া ঠিক হবে না, ভৃগুকে আরও তপস্যা করতে হবে। বরুণদেব পুনরায় পূর্ববৎ উত্তর দিলেন-'তুমি তপ দ্বারাই ব্রহ্মকে জানার ইচ্ছা করো। অর্থাৎ তপস্যাপূর্বক পূর্বকথনানুসারে বিচার করো। তপই ব্রহ্ম।'

এবার ঋষি ভৃগু পিতৃদেবের উপদেশে গভীর বিচারপূর্বক নিশ্চয় করলেন যে, আনন্দই ব্রহ্ম। এই আনন্দময় পরমাত্মাই অন্নময়াদি সকলের অন্তরাত্মা। ওই সমস্ত এঁরই স্থূলরূপ।সকলের জীবনের আধার হলেন একমাত্র আনন্দস্বরূপ পরমাত্মাই। তিনিই সর্বপ্রকারে সর্বদা সকলের আধার। এইরূপ অনুভূতি হওয়াতে ঋষি ভৃগুর পরব্রহ্মের যথার্থ জ্ঞান হল। তাঁর আর কোনো জিজ্ঞাসা রইল না। শ্রুতি স্বয়ং ওই বিদ্যার মহিমা জানিয়ে বলছেন-এটি সেই বরুণ দ্বারা কথিত এবং ভৃগুপ্রাপ্ত ব্রহ্মবিদ্যা। এই বিদ্যা বিশুদ্ধ আকাশস্বরূপ পরব্রহ্ম পরমাত্মায় স্থিত।

উপনিষদের এই আলোচনা থেকে আমরা বুঝতে পারলাম পিতৃরূপ গুরু তাকে নানাবিধ পরীক্ষার মাধ্যমে সত্যের প্রকৃত সন্ধানের উপলব্ধি করালেন। এইরূপ গুরু বা ইষ্ট ভক্তের সমস্ত সূক্ষ্ম, শুদ্ধচিন্তার তরঙ্গকে বোঝেন, বোঝেন ভক্তের চেষ্টাকে এবং তিনি মনকে সেই দিকেই (সত্যের পথে) চালিত করেন বিভিন্ন ঘটনার মধ্য দিয়েই। সংসার আমাদের প্রত্যেককেই এইরকম পরীক্ষা নিয়ে থাকে, শুধুমাত্র সত্যে প্রতিষ্ঠিত করবার জন্য। আমরা প্রত্যেকেই নানাবিধ পরীক্ষার মধ্যে দিয়েই চলেছি, কারণ এটি হচ্ছে সম্পূর্ণ শুদ্ধতার পথ, এই পথ দিয়ে যাওয়ার মধ্যে আমরা প্রত্যেকে শুদ্ধ হয়েই চলেছি অতএব এখানে কোন বলে দেওয়ার জায়গা থাকে না বলেই বোধ হয়। শুধু থাকে নীরবতা এবং আনন্দ। আমাদের শুধু ধৈর্য্য ধরে নিষ্ঠা সহকারে তাঁর প্রতি সমর্পণ রেখে কর্ম (সাধনা) করা দরকার। তখন তিনিই সব কর্মের ভার নিজে হাতে বহন করেন।

আবার অন্যদিকে আরেক ভালোবাসা হলো 'মা বা প্রকৃতি মা'- এর প্রতি সন্তানের নিঃস্বার্থ ভালোবাসা। এখানেও ভালোবাসার মধ্যে কোন চাওয়া-পাওয়া থাকে না। একজন মা'ই তার সন্তানকে প্রথম ভালোবাসার সাথে হাত ধরে চলতে শেখায়, আবার মা'ই সন্তানকে হাত ছেড়েও চলতে শেখায়, বিভিন্ন পরিস্থিতি কে অতিক্রম করবার জন্য প্রস্তুত করে দেন।

একাধারে ভগবানের প্রতি ভক্তের যে ভালোবাসা, তার মধ্যেও থাকে শুধুমাত্র সমর্পণ এখানেও কোন চাওয়া-পাওয়া থাকে না। যেমন চৈতন্য মহাপ্রভুর শ্রীকৃষ্ণের প্রতি ভালোবাসা, মিরা বাইয়ের শ্রীকৃষ্ণের প্রতি ভালোবাসা, ঠাকুর শ্রীরামকৃষ্ণ পরমহংসদেবের মা কালীর প্রতি ভালবাসা।

অতএব ভালোবাসা হচ্ছে একটা তরঙ্গ যেটা একে অপরের মধ্যে আদান-প্রদান করে দুইকে একই সমতা এনে দেয়, তবেই সেই মিল বন্ধন তৈরি হয়। উদাহরণস্বরূপ বলা যেতে পারে- ভক্ত শিরোমনি হনুমানজি শ্রী রামচন্দ্রকে বলছেন- 'যখন আমি ভক্ত তখন তুমি আমার প্রভু; আবার যখন তুমিও যা আমিও তাই- তখন আমি তুমি মিলে মিশে এক হয়ে যায়। তখন আর আমি তুমি থাকে না।' এ হচ্ছে ইষ্টের প্রতি এক ভক্তের সমর্পণিত শুদ্ধ ভালোবাসা। যেখানে ভক্ত ও ভগবান মিলে মিশে এক হয়ে যায়। যেখানে কোন চাওয়া-পাওয়া থাকে না।

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

আরো বলা যায়, সাধক রামপ্রসাদ যখন বেড়া বাঁধছেন তিনি দেখছেন মা কালী স্বয়ং নিজে হাতে তাঁর বেড়া বেঁধে দিচ্ছেন। এখানেও দুজনার মধ্যে ভালোবাসার তরঙ্গের আদান-প্রদান হয়ে সমর্পিত মন তাকে দেখাচ্ছেন।

অতএব ‘শুদ্ধ ভালবাসা’- এ এমন এক তরঙ্গ যা এ জগৎ সংসারে যে যেখানেই থাকুক না কেন, এই তরঙ্গ কোন কিছুরই বাধা মানে না। একে অপরকে ঠিক নিজেদের কাছে এনে দেয়। প্রসঙ্গত এখানে উল্লেখ করছি যে, অনেক গুপ্ত সাধকই জগৎ সংসারের বিভিন্ন জায়গায় থেকে তাঁরা তাঁদের সাধনা করে যাচ্ছেন জগৎ কল্যাণের জন্য। কিন্তু কিভাবে তাঁরা একে অপরের সঙ্গে যোগাযোগ রাখেন বা যোগাযোগ স্থাপন করেন? যেরকম পাঁচ কিলোমিটার দূরে লাগানো একটি বালব- পাঁচ কিলোমিটার দূরের থেকে যদি সুইচ দেওয়া হয়, বিদ্যুৎ তরঙ্গ পৌঁছে গিয়ে বালবকে জ্বলতে সাহায্য করে। এও ঠিক বিদ্যুৎ তরঙ্গেরই মতো আর এক তরঙ্গ। এই ভালোবাসার তরঙ্গ ছড়িয়ে আছে গোটা জগৎ সংসারে -অতএব যে এই অবস্থায় এসে এক হতে পারে তখন দূরত্বটা কোন প্রাধান্য রাখেনা। এই অবস্থায় এসে নিজে নিজেই সব কিছু এক হয়ে যায়, যেমনটা হনুমানজি এবং শ্রী রামচন্দ্রের উদাহরণে বলা হলো।

গুরুদেবের মুখে প্রায়শই শুনে থাকি যে ক্রিয়াতে কোন চুক্তি হয় না, গুরুর সাথে কোন চুক্তি হয় না। খুব স্থির মনে ভাবলে আমরা বুঝতে পারবো যে, যেখানেই চুক্তি আসে সেখানেই রয়েছে লাভ করার আশা- প্রত্যাশা, এবং সেইখান থেকেই জন্মায় চাহিদার, এবং চাহিদা পূর্ণ না হলে দুঃখ আসে, দুঃখ থেকে হয় অভিমান, এবং সেখান থেকে জন্মায় রাগ, এবং যা সাধকের সাধনার গতিপথকে পরিবর্তিত করে দেয়। অতএব আমাদের এই দিকটা সকলকেই ভাবতে হবে যে, আমরা যে যে পথেই থাকি না কেন এখানে শুধুমাত্র সম্পর্ক থাকা উচিত সাধনার সাথে এবং গুরুরূপী ঈশ্বরের সাথে।

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

কোন ভেদজ্ঞান এখানে না থাকাই ভালো। কারণ ভেদজ্ঞান থাকলেই সেখানে ছোট-বড়, উঁচু-নিচু নিয়ে বিচার চলে আসে এবং বিচার এলেই সেখানে মন সরল থেকে জটিলতার দিকে চলে যায়। অতএব সেখানে সাধকের স্বাভাবিকভাবেই মানসিক স্তরের বিচ্যুতি ঘটে। প্রত্যেকেই যে যে অবস্থাতেই থাকুক না কেন সেখান থেকে অন্য অবস্থায় (উচ্চ অবস্থায়) আসার চেষ্টা করে যেতে হবে শ্রী গুরুর আশ্রয়ে থেকে। আমাদের প্রত্যেককেই চেষ্টা করে যেতে হবে চাহিদা শূন্য হয়ে সমর্পিত মনে এই শুদ্ধ ভালোবাসাকে অর্জন করার। যেখানে কোন স্বার্থ থাকবে না, চুক্তি থাকবে না যেখানে থাকবে শুধুই সমর্পিত ভালোবাসা। জয় গুরুদেব।

 © 2011-26 RYKYM.org All Rights Reserved

ASHRAM PUBLICATION

RYKYM

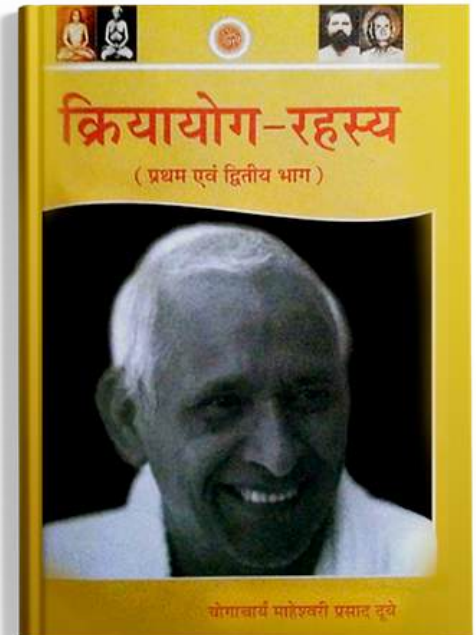

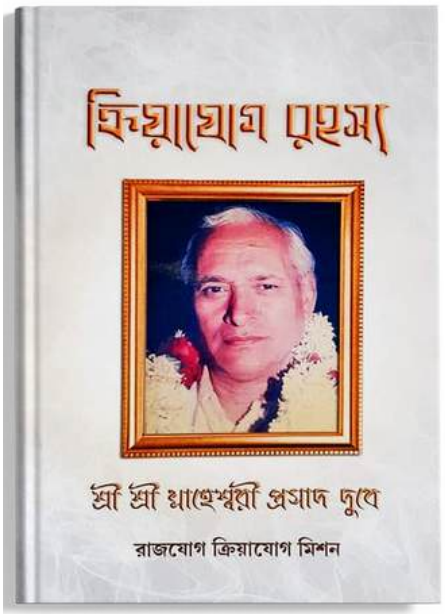

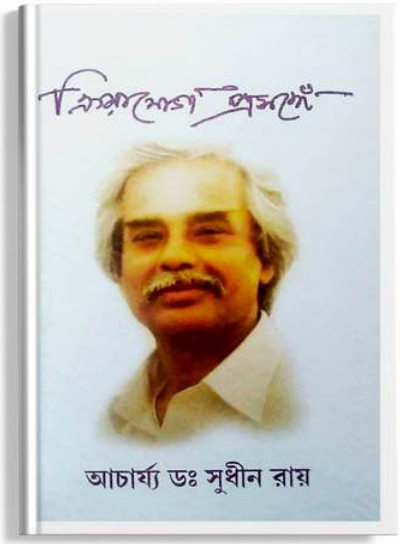

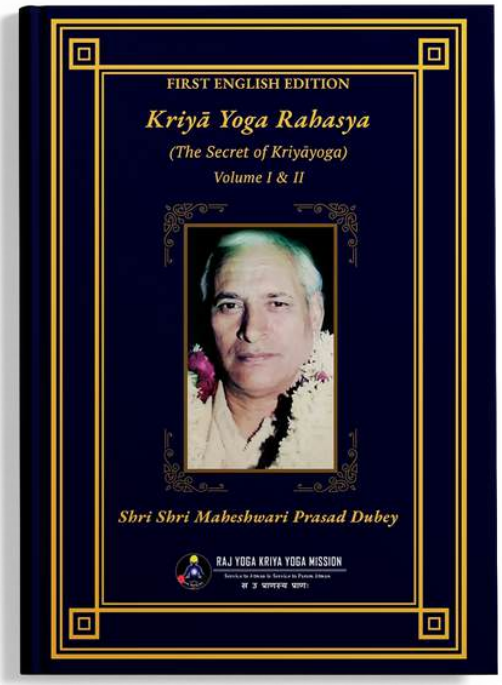

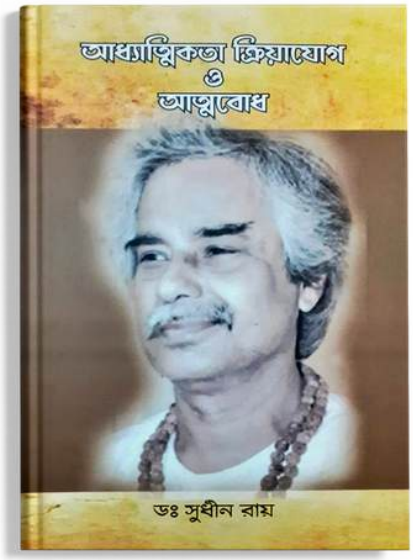

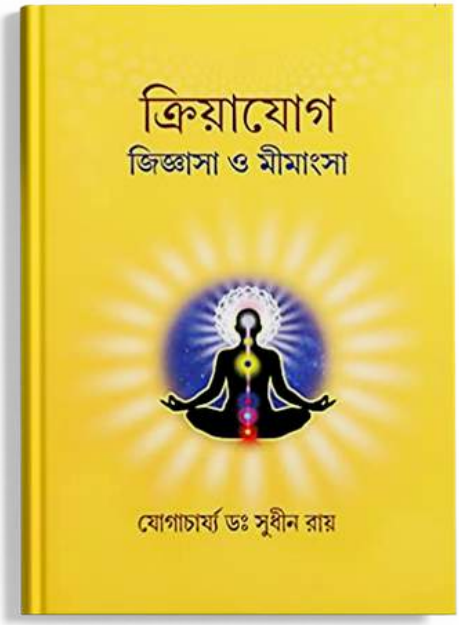

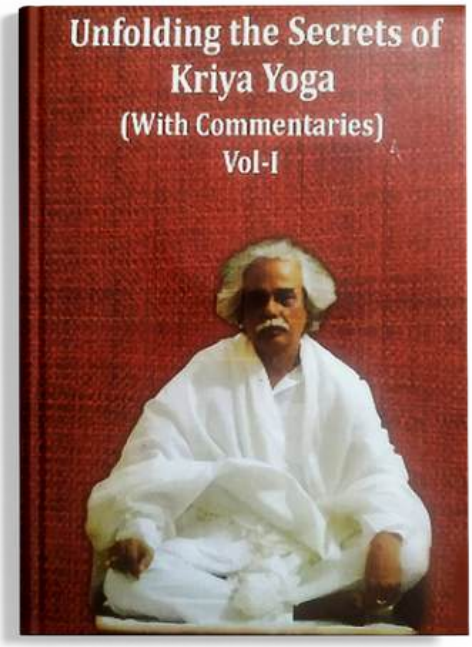

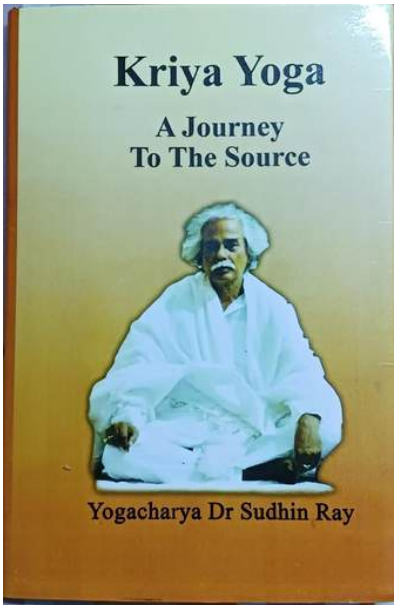

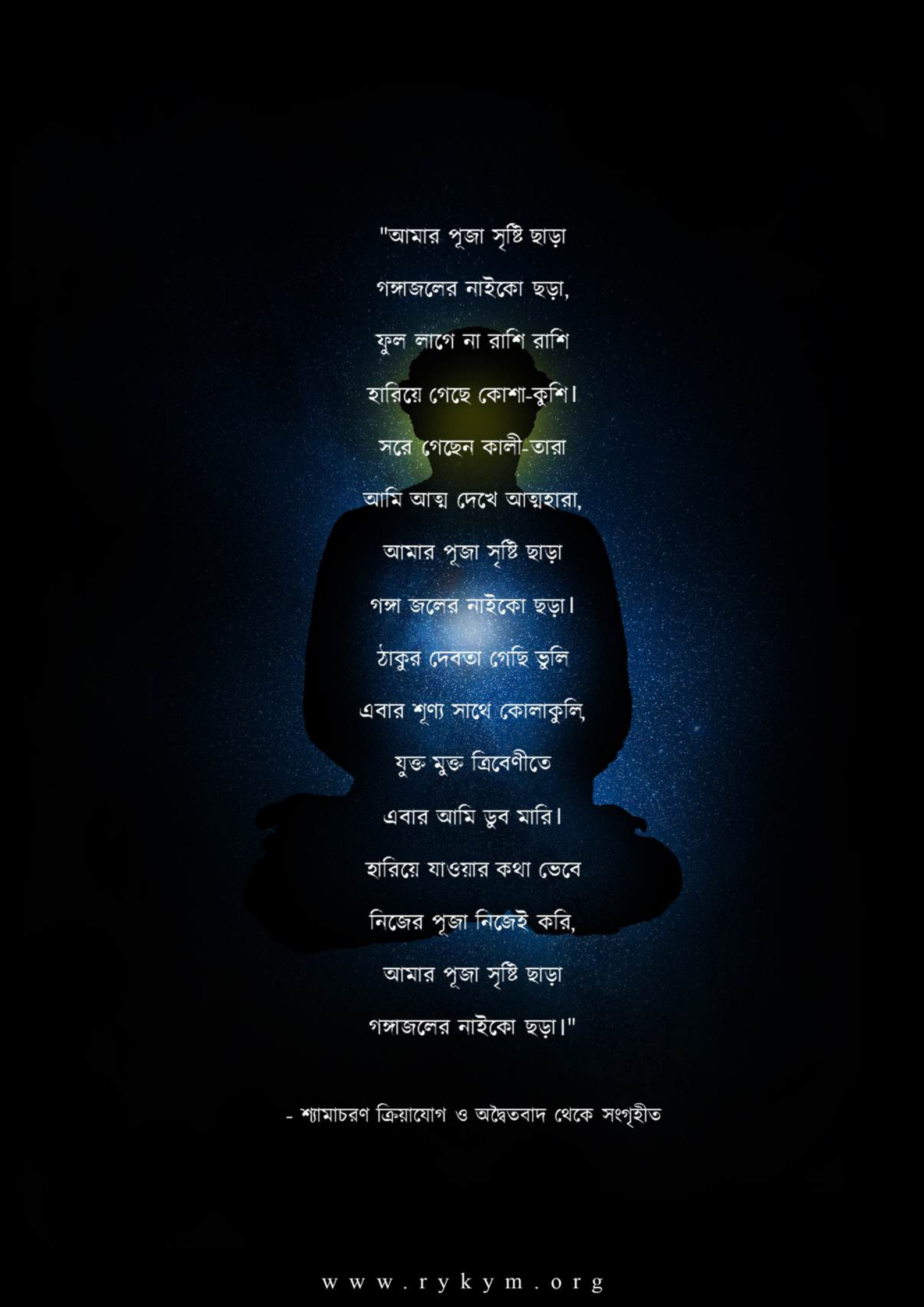

"আমার পূজা সৃষ্টি ছাড়া
গঙ্গাজলের নাইকো ছড়া,
ফুল লাগে না রাশি রাশি
হারিয়ে গেছে কোশা-কুশি।
সরে গেছেন কালী-তারা
আমি আত্ম দেখে আত্মহারা,
আমার পূজা সৃষ্টি ছাড়া
গঙ্গা জলের নাইকো ছড়া।
ঠাকুর দেবতা গেছি ভুলি
এবার শূণ্য সাথে কোলাকুলি,
যুক্ত মুক্ত ত্রিবেণীতে
এবার আমি ডুব মারি।
হারিয়ে যাওয়ার কথা ভেবে
নিজের পূজা নিজেই করি,
আমার পূজা সৃষ্টি ছাড়া
গঙ্গাজলের নাইকো ছড়া।"

- শ্যামাচরণ ক্রিয়াযোগ ও অদ্বৈতবাদ থেকে সংগৃহীত